Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ
فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ
اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :116)

अनुवाद: अल्लाह ही का है पूर्व भी और पश्चिम भी। अत: जिस ओर भी तुम मुंह फेरो, वहीं ख़ुदा का जलवा पाओगे। निस्संदेह अल्लाह बहुत सामर्थ्य प्रदान करने वाला और अनादि ज्ञान रखने वाला है करते हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 11

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

15 मार्च 2018 ई. 26 जमादी उस्सानी 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

मैं सर्वशक्तिमान ख़ुदा का धन्यवाद करता हूं कि मेरे निशानों के केवल मुसलमान ही गवाह नहीं बल्कि दुनिया में जितनी भी क़ौमें हैं वे सब मेरे निशानों की गवाह हैं। अत: इस पर अल्लाह की प्रशंसा

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

निशान-114- प्लेग के फैलने के बारे में मुझे इल्हाम हुआ الامراض تشاع والنفوس تُضاع अर्थात बीमारियां फैल जाएंगी और जानों का नुकसान होगा और जो व्यक्ति चाहे देख ले कि मैंने इस इल्हाम को प्लेग के फैलने से पहले अखबार अल-हकम और अल-बदर में प्रकाशित कर दिया था। फिर बाद इसके पंजाब में इतनी प्लेग फैली कि हज़ारों घर मौत से वीरान हो गए।

निशान-115- सिराज-ए-मुनीर पुस्तक में प्लेग के आने के बारे में एक भविष्यवाणी है یا مسیح الخلق عَدوانا अर्थात हे वह मसीह जो सृष्टि के लिए भेजा गया हमारे प्लेग की ख़बर ले। फिर इसके बाद भयानक प्लेग पड़ी और हज़ारों लोग प्लेग से डरकर मेरी तरफ दौड़े, मानो उनकी ज़बान पर यही शब्द था یا مسیح الخلق عَدوانا और यह भविष्यवाणी जिस तरह मेरी पुस्तक सिराज-ए-मुनीर में दर्ज है इसी तरह सैकड़ों आदमियों को घटना से पूर्व इसकी सूचना दी गई थी।

निशान-116- एक बार सुबह के समय अल्लाह की वह्यी से मेरी ज़बान पर जारी हुआ عبد اللہ خان ڈیرہ اسمٰعیل خان (अब्दुल्ला खान डेरा इस्माइल खान) और समझाया गया कि इस नाम का एक व्यक्ति आज कुछ रुपए भेजेगा। मैंने कुछ हिंदुओं के पास जो वह्यी के सिलसिला के जारी रहने का इनकार करते हैं और बहुत कुछ वेद पर वह्यी को खत्म कर बैठे हैं, इस ख़ुदा के इल्हाम का वर्णन किया और मैंने बताया कि अगर आज रुपया न आया तो मैं सच्चा नहीं। उनमें से एक हिंदू बिशनदास नाम का ब्राह्मण कौम से संबंध रखता है जो आजकल एक जगह का पटवारी है, बोल उठा कि मैं इस बात की परीक्षा करूंगा और मैं डाकखाना में जाऊंगा। उन दिनों में कादियान में डाक दोपहर के बाद 2:00 बजे आती थी। वह उसी समय डाकखाना में गया और अत्यंत हैरान होकर वापस आया। ख़बर लाया कि वास्तव में अब्दुल्ला खान नाम एक व्यक्ति ने जो डेरा इस्माइल खान में एक्स्ट्रा असिस्टेंट है, कुछ रुपए भेजे हैं और वह हिंदू अत्यंत आश्चर्य चकित और हैरान होकर बार-बार मुझ से पूछता था कि यह बात आपको किसने बताई और उसके चेहरे से आश्चर्य के लक्षण प्रकट हो रहे थे। तब मैंने उसको कहा कि उसने बताया जो गुप्त भेद जानता है। वही ख़ुदा है जिसकी हम उपासना करते हैं चूंकि हिंदू लोग उस जीवित ख़ुदा से अपरिचित हैं जो हमेशा अपनी क़ुदरत और इस्लाम पर सच्चाई के उदाहरण प्रकट करता रहता है। इसलिए सामान्यत: हिंदुओं की आदत है कि पहले तो ख़ुदा तआला के विलक्षण निशानों से इनकार करते हैं और जब कोई ऐसा व्यक्ति उनको मिल जाए कि परोक्ष की गुप्त बातें उसके हाथ से प्रकट हों, तब हैरानी और आश्चर्य के दरिया में डूब जाते हैं।

इसी प्रकार लाला शर्मपथ का हाल हुआ था जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं उसका भाई विशंभरदास और एक और व्यक्ति खुशहाल नाम किसी जुर्म में कैद हो गए थे। और शर्मपथ ने केवल परीक्षा के दृष्टिकोण से न किसी आस्था से, मुझसे पूछा था कि मुकद्दमा का परिणाम क्या होगा और दुआ का भी का निवेदन किया था। तब मैं कई दिन उसके लिए दुआ करता रहा, अंत में वह ख़ुदा जो परोक्ष का ज्ञाता है उसने रात के समय यह गुप्त भेद मुझ पर खोल दिया कि मुकद्दमा का परिणाम यह होगा कि विशंभरदास की आधी कैद कम कर दी जाएगी, जैसा की मैंने अपने स्वप्न की हालत में देखा था कि आधी कैद उसकी स्वयं मैंने अपनी कलम से काट दी है, मगर मुझ पर प्रकट किया गया कि खुशहाल को पूरी कैद भुगतनी पड़ेगी एक दिन भी काटा नहीं जाएगा और विशंभरदास की आधी क़ैद रह जाना केवल दुआ के प्रभाव से होगा मगर दोनों में से कोई भी रिहा नहीं होगा और ज़रूरी है कि मिस्ल ज़िला में वापस आए और परिणाम वह हो जो बयान किया गया। मुझे याद है कि जब यह सब बातें पूरी हो गईं तो शर्मपथ आश्चर्य में पड़ गया और हमारे ख़ुदा की कुदरत ने उसको अत्यंत आश्चर्य चकित कर दिया और उसने मेरी ओर पत्र लिखा कि यह सब बातें आपके सौभाग्य के कारण पूरी हो गईं। अफसोस कि उसने फिर भी इस्लाम के नूर से कुछ लाभ नहीं उठाया और आजकल वह आर्य है और हिदायत तो एक ओर मुझे तो उन लोगों से इतनी भी उम्मीद नहीं कि वे सच्ची गवाही दे सकें। यद्यपि बज़ाहिर यही बकवास है कि सच्चाई की हिमायत करनी चाहिए मगर इसका वे स्वयं पालन नहीं करते, हां मैं विश्वास रखता हूं कि अगर ऐसे गवाह शर्मपथ को क़सम दी जाए और क़सम मैं झूठ की हालत में औलाद पर असर पड़ने का इक़रार कराया जाए तो फिर अवश्य सच बोल देगा। मेरी कई भविष्यवाणियों की गवाहियां उसके पास हैं। संभव है कि पीछा छुड़ाने के लिए यह कह दे कि मुझे याद नहीं मगर क़सम एक ऐसी चीज़ है किस अवश्य उसे याद आ जाएगा और अगर झूठ बोलेगा तो निसंदेह याद रखो कि मेरा ख़ुदा उसे दंड देगा और यह भी एक निशान प्रकट होगा। वह खुले खुले 9 निशानों का गवाह है। मैं सर्वशक्तिमान ख़ुदा का धन्यवाद करता हूं कि मेरे निशानों के केवल मुसलमान ही गवाह नहीं बल्कि दुनिया में जितनी भी क़ौमें हैं वे सब मेरे निशानों की गवाह हैं। अत: इस पर अल्लाह की प्रशंसा (करता हूँ)।

निशान-117- एक बार एक आर्य मलावामल नाम का व्यक्ति तेज़ बुख़ार की बीमारी में ग्रस्त हो गया और नाउम्मीदी के लक्षण प्रकट होते गए और उसने स्वप्न में देखा कि एक विषैला सांप उसको काट गया। वह एक दिन अपनी जिंदगी से निराश होकर मेरे पास आ कर रोया, मैंने उस उसके लिए दुआ की तो उत्तर मिला

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

قلنا یا نارکُونی بردًا وسلامًا अर्थात हमने बुखार की आग को कहा कि ठंडी और सलामती हो जा। अत: इसके बाद वह एक सप्ताह में ठीक हो गया और अब तक वह जिंदा मौजूद है। देखो बराहीन-ए-अहमदिया पृष्ठ 227, मगर विश्वास है कि उसकी गवाही के लिए भी क़सम दिलाने की ज़रूरत पड़ेगी।

निशान-118- एक बार जब मैं गुरदासपुर में एक फौजदारी मुक़द्दमे के कारण जो कर्मदीन नामी व्यक्ति ने मेरे ऊपर दायर किया था, मौजूद था। मुझे इल्हाम हुआ یسئلونك عن شانك- قل اللّٰہ ثم ذرھم فی خوضھم یلعبون अर्थात तेरी शान के बारे में पूछेंगे कि तेरी क्या शान और क्या रुतबा है, कह दे वह ख़ुदा है जिसने मुझे यह रुतबा प्रदान किया है फिर उनको अपनी खेलकूद में छोड़ दे। अत: मैंने यह इल्हाम अपनी उस जमाअत को जो गुरदासपुर में मेरे साथी थी जो 40 आदमी से कम नहीं होंगे, सुना दिया। जिनमें मौलवी मोहम्मद अली साहब m।a। और ख्वाजा कमालुद्दीन साहब बी ए प्लीडर भी थे। फिर इसके बाद जब हम कचहरी में गए तो विपक्षी के वकील ने मुझसे यही सवाल किया कि क्या आप की शान और आपका मर्तबा ऐसा है जैसा कि तिर्याकुल क़ुलूब पुस्तक में लिखा है? मैंने उत्तर दिया कि हां, ख़ुदा के फज़ल से यही मर्तबा है, उसी ने यह मर्तबा मुझे प्रदान किया है। तब वह इल्हाम जो ख़ुदा की तरफ से सुबह के समय हुआ था लगभग असर (तीसरे पहर) के समय पूरा हो गया और हमारी समस्त जमाअत के ईमान में बढ़ोतरी का कारण बना।

(हक़ीक़त वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22 पृष्ट 275)

आपका सारा जीवन आपके शब्द आपकी चाल ढाल और व्यवहार इस चीज को दर्शाने वाले होने चाहिए कि आपने अल्लाह तआला को हर वस्तु पर प्राथमिकता दी है और आपको किसी पुरस्कार की इच्छा नहीं, धर्म की सेवाओं का जोश केवल ख़ुदा ताला के लिए है फिर आप वास्तविक वाकिफ़ात-ए-नौ बन जाएंगीं

अधिक से अधिक क़नाअत (कम में संतुष्टि) पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए क़नाअत एक ऐसी चीज़ है जो कि घरों में पैदा हो जाए तो बहुत सारी समस्याएं घरों की सुलझ जाती हैं, औरतों को भी विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने पति की जितनी आमदनी है, उसके अनुसार अपने पांव फैलाएं

अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को पीछे छोड़ कर सिर्फ और सिर्फ एक इच्छा होनी चाहिए कि हमने जीवन अल्लाह ताला की इच्छा के अनुसार व्यतीत करना है और अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करना है और कभी किसी के लिए अपने आदर्श से ठोकर का कारण नहीं बनना

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के वाकिफ़ात-ए-नौ को स्वर्णिम उपदेश

अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य

जिस प्रकार मर्द को आदेश है कि धार्मिक लड़की तलाश करे इसी प्रकार लड़कियों को भी धार्मिकता देखनी चाहिए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

"जब भी रिश्ता हो तो जिस तरह मर्द को आदेश है कि एक ऐसी लड़की तलाश करो जो धार्मिक हो इसी प्रकार लड़कियों को भी धार्मिकता देखनी चाहिए आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जैसे फरमाया है कि ना दुनिया देखो, ना दौलत देखो, ना खानदान देखो, न सुंदरता देखो बल्कि धार्मिकता देखो और अगर पति वक़्फ़े-ए-नौ हो और धार्मिक भी हो तो आपको दीन की सेवा करने से नहीं रोकेगा।"

(क्लास वाकिफ़ात-ए-नौ केनेडा 20 मई 2013, मरियम अक्टूबर 7 दिसंबर 2013)

हर लड़की को अपने नेक नसीब के लिए दुआ करनी चाहिए

एक सवाल पर कि शादी के लिए इस्तिखारा किसको करना चाहिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

"लड़की को खुद करना चाहिए। हज़रत अम्मा जान फरमाया करती थीं कि जब लड़कियां 6-7 साल की हो जाएँ तो अपने नेक नसीब के लिए दुआ करनी शुरू कर दें। तो हर लड़की को अपने नेक नसीब के लिए दुआ करनी चाहिए कि जब भी ऐसा समय आए जब उनका रिश्ता आए तो जो बेहतर हो वह हो। यह नहीं कि अमुक के पास पैसे हैं, अमुक के पास ओहदा है, अमुक के पास नौकरी है, अमुक का खानदान अच्छा है तो मैंने रिश्ता करना है। अल्लाह ताला बेहतर जानता है, परोक्ष का ज्ञान उसको है वह जिसके लिए जो बेहतर समझता है उसके अनुसार करो। बाकी छोटी-छोटी बातें तो रिश्तो के बाद भी हो जाती हैं, फिर उनको इग्नोर भी करना चाहिए। फिर यह है इस रिश्ते से संबंध न रखने वाले लोग जो हैं जिनका कोई सीधे तौर पर संबंध नहीं होता उनसे भी इस्तिखारा करवा लेना चाहिए। उनको भी कभी-कभी कोई ख्वाब आ जाती है या कोई न कोई पैगाम मिल जाता है।

(क्लास वाकिफ़ात-ए-नौ जर्मनी 27 मई 2012 अलफज़ल इंटरनेशनल 20 जुलाई 2012)

कभी किसी के लिए अपने आदर्श से ठोकर का कारण नहीं बनना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

अब अल्लाह तआला के फजल से वक़्फ़-ए-जिंदगी की फौज में लड़कियां भी सम्मिलित हैं उनकी भी ज़िम्मेदारियां बन जाती हैं अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं को छोड़ते हुए, पीछे रख कर सिर्फ और सिर्फ एक इच्छा होनी चाहिए कि हमने जीवन अल्लाह ताला की इच्छा के अनुसार व्यतीत करना है और अपनी ज़िम्मेदारियों को अदा करना है और कभी किसी के लिए अपने आदर्श से ठोकर का कारण नहीं बनना।

(खुत्बा निकाह 12 नवंबर 2014 अलफज़ल इंटरनेशनल 27 जनवरी 2017)

एक दूसरे के की भावनाओं का एहसास करेंगे तो जीवन बहुत सुंदरता पूर्वक व्यतीत होगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

एक वाकिफ़-ए-ज़िंदगी, वाकिफ़े-ए-नौ को हमेशा याद रखना चाहिए कि चाहे उसके घरेलू मामले हों या बाहरी सामाजिक संबंध, उन सब में उसको एक आदर्श होना चाहिए। विशेष रूप से अगर आप घरेलू मामले में पति-पत्नी के संबंधों में एक दूसरे की भावनाओं का एहसास रखेंगे तो जीवन बहुत सुंदरता पूर्वक व्यतीत होगा, बड़ी सरलता से गुज़रेगा, बड़े शांतिपूर्वक गुज़रेगा और फिर आइंदा नस्लें भी अपने माता पिता के आदर्शों पर चलते हुए उस जीवन को अपनाने की ओर ध्यान देंगीं जो अल्लाह तआला ने एक मोमिन के लिए अपनाने का आदेश फरमाया है।

(खुत्बा निकाह 9 अगस्त 2014 अलफज़ल इंटरनेशनल 4 नवंबर 2016)

अपने आप को पूर्णता धर्म की सेवा के लिए प्रस्तुत भी करें

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

दोनों वाकिफ़े-ए-नौ हैं, अल्लाह ताला उनको सामर्थ्य प्रदान करे कि ये

पृष्ठ 9 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

जिस सिलसिले के सेवक तथा निष्ठा पूर्वक वक़्फ़ निभाने वाले तथा खिलाफत के आज्ञाकारी के विषय में बयान करना चाहता हूँ, उनके बारे में इतनी अधिक सामग्री जमा हो गई है कि वही मुशकिल से बयान हो सकती है। और इसमें से भी शायद मैंने पांचवां भाग लिया है और जो लिया है वह भी शायद न बयान कर सकूँ। ये घटनाएँ अपने आप में ही एक वाकिफ-ए-ज़िन्दगी के लिए, इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के परिवार और लोगों के लिए तथा जमाअत के ओहदेदारों और लोगों के लिए, कई प्रकार से मार्ग दर्शन करने वाली तथा अनुसरण योग्य हैं।

मुकर्रम व मुहतरम साहिबज़ादा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब पुत्र हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु

मुकर्रम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़ पोते थे, हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े बेटे थे, उनके पोते थे। हज़रत मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहब के साहिबज़ादे थे और हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहब रज़ि. के नवासे थे तथा मेरे बहनोई भी थे।

वास्तव में इन रिश्तों को जो चीज़ याद करने योग्य बनाती है वे इनकी विशेषताएँ हैं जो मैं बयान करुंगा मुकर्रम साहिबज़ादा मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब के औसाफ़-ए-हमीदा (विशेषताओं) का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

सौभाग्यशाली होते हैं वे लोग जो ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए जीवन व्यतीत करने की कोशिश करते हैं अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलंद करे और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों पर क़ायम रहने की और करने की तौफीक़ अत फरमाए और समस्त वाकिफीन-ए-ज़िन्दगी और समस्त ओहदेदारों को भी चाहिए कि जिस प्रकार उन्होंने वफ़ा के साथ अपने वक़्फ़ को निभाया और अपने सुपुर्द कर्तव्यों को निभाया वे भी कोशिश करें कि अल्ल्लाह तआला उनको तौफीक़ अत फ़रमाए, अल्लाह तआला जमाअत को आइन्दा भी नेक, सालेह और फ़िदा और वफ़ा के साथ खिदमत करने वाले कारकुनान (सेवक) उपलब्ध करता रहे

मुकर्रमा दीपानो फरोख हूद साहिबा की वफात, मरहूमा का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 फरवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत आयशा रज़ि। से रिवायत है कि जिस मय्यत का जनाज़ा सौ मुसलमान पढ़ें तथा वे सारे के सारे उसके लिए क्षमा याचना करें तो उनकी सिफारिश स्वीकार की जाएगी।

(सही मुस्लिम किताबुल जनायाज़, हदीस- 2198)

फिर यह भी एक रिवायत है कि एक जनाज़ा जाने पर लोगों ने जब उस व्यक्ति की प्रशंसा करना आरम्भ की तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस पर जन्नत वाजिब हो गई।

(सही बुख़ारी किताबुल जनायाज़, हदीस- 1367)

मेरा विचार था कि मैंने आज दो जनाज़े पढ़ाने हैं इस लिए जनाज़ों और कफन दफन के विषय में कुछ हदीसें, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कथन तथा इस्लामी धर्म शास्त्र की बातें भी बयान करुंगा तथा फिर मृतकों का वर्णन करुंगा। किन्तु आज इसके अनुसार बयान करना सम्भव नहीं क्यूँकि जिस सिलसिले के सेवक तथा निष्ठा पूर्वक वक़्फ निभाने वाले तथा ख़िलाफ़त के आज्ञाकारी के विषय में बयान करना चाहता हूँ, उनके बारे में इतनी अधिक सामग्री जमा हो गई है कि वही मुशकिल से बयान हो सकती है। और इसमें से भी शायद मैंने पांचवां भाग लिया है और जो लिया है वह भी शायद न बयान कर सकूँ। ये घटनाएँ अपने आप में ही एक वाकिफ-ए-ज़िन्दगी के लिए, इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के परिवार और लोगों के लिए तथा जमाअत के ओहदेदारों और लोगों के लिए, कई प्रकार से मार्ग दर्शन करने वाली तथा अनुसरण योग्य हैं।

जैसा कि आप जानते हैं पिछले दिनों मुकर्रम व मुहतरम साहिबज़ादा मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब पुत्र हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहब रज़ि। का 78 वर्ष की आयु में निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उनका निधन अचानक दिल के दौरे के कारण हुआ। यद्यपि उनको एक लम्बे समय से दिल की तकलीफ थी लेकिन cardiac arrest हुआ जिसके कारण तुरंत घर में ही वफात हो गई।

मुकर्रम मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़ पोते थे, हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सबसे बड़े बेटे थे, उनके पोते थे। हज़रत मिर्ज़ा अज़ीज़ अहमद साहब के साहिबज़ादे थे और हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहब रज़ि। के नवासे थे तथा मेरे बहनोई भी थे। इनकी वालिद: साहिबज़ादी नसीरा बेगम हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक साहब की सबसे बड़ी साहिबज़ादी थीं। वास्तव में इन रिश्तों को जो चीज़ याद करने योग्य बनाती है वे इनकी विशेषताएँ हैं जो मैं बयान करुंगा। मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब खादिम-ए-दीन थे, वक़्फे ज़िन्दगी थे। बावजूद कमज़ोरी के, बीमारी के तथा बड़े भाई के निधन के पश्चात जब इनको मैंने नाज़िर आला नियुक्त किया तो सारे कत्र्तव्य बड़ी कुशलता पूर्वक निर्वाह किए। दफ्तर में हाजिर रहे इसी प्रकार

प्रोग्रामों पर भी हाजिर होते रहे। एक दिन पहले मदरसतुल हिफ्ज़ का प्रोग्राम था। कामयाब होने वाले छात्रों में डिग्रियां वितरित करनी थीं वहां सम्मिलित हुए। शाम को खुद्दामुल अहमदिया के प्रोग्राम में सम्मिलित हुए। मृत्यु वाले दिन भी सुबह कई लोगों के घरों में गए मरीज़ो से मिले। फिर इसी प्रकार पांचों नमाज़ें मस्जिद मुबारक में जाकर पढ़ीं। वक्फे ज़िन्दगी के रूप में इनके जीवन का आरम्भ मई 1962 में हुआ। इन्होंने एम ए पोलिटीकल साईंस गवरमैन्ट कॉलिज लाहौर से किया फिर इन्होंने पब्लिक सर्विस कमीशन की CSS की परीक्षा दी तथा उसमें सफल हुए। मुझे इन्होंने स्वयं बताया कि मैंने यह परीक्षा केवल इस लिए दी थी कि लोग कहते थे कि यह बड़ी कठिन परीक्षा होती है तथा सफलता बड़ी मुश्किल से मिलती है और इसलिए भी यह परीक्षा दी कि सांसारिक दृष्टि से भी सफलता प्राप्त करने के बाद फिर वक्फ करूँ ताकि कोई यह न कहे कि कहीं और जगह नहीं मिली तो यहाँ आ गए। इस सफलता के बावजूद सरकारी नौकरी नहीं की तथा जीवन समर्पित कर दिया। जैसा कि मैंने कहा 1962 में इन्होंने ज़िन्दगी वक्फ की। फिर उनको हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि। ने मैनेजिंग एडिटर रिव्यू ऑफ रिलीजन रब्वा़ की सेवा सुपुर्द की। और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि। ने फरमाया कि दुनिया की शिक्षा के साथ जो तुमने प्राप्त कर ली है, दीन की शिक्षा भी प्राप्त करो। अत: इन्होंने हज़रत सय्यद मीर दाऊद अहमद साहब से हदीस तथा दीन की अन्य विद्या प्राप्त की। हज़रत मीर दाऊद अहमद साहब रिव्यू ऑफ रिलीजन के एडिटर थे और रिश्ते में उनके मामू भी थे उनका पहला नाम मिर्ज़ा सईद अहमद था बाद में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उनकी मां के कहने पर उनका नाम मिर्ज़ा अहमद रखा। उन्होंने सीरत उल महदी में कोई वाक्य पढ़ा था और इस लिहाज से उनका विचार था कि मिर्ज़ा सईद अहमद नाम ना रखा जाए। मिर्ज़ा सईद अहमद उनकी पहली मां से उनके भाई थे जिनकी जवानी में मृत्यु हो गई थी। यहां UK में भी आकर वह पढ़ते रहे। मिर्ज़ा मुज़फ्फर अहमद साहब आदि के सहपाठी थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद को उन्होंने साथ ही यह भी कहा कि अगर कोई नाम बदला तो हज़रत मिर्ज़ा अजीज अहमद साहब को दुख होगा तो उनकी भी तसल्ली हो जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रजि अल्लाह अन्हु ने फरमाया तो फिर हम ऐसा नाम रखते हैं जिस वजह से उनके पिता को भी कष्ट न हो और फिर आपने मिर्ज़ा गुलाम अहमद नाम रखा और साथ ही हज़रत मुस्लेह मौऊद ने यह फरमाया कि हम उसको अहमद कहकर पुकारेंगे क्योंकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु को अभी इतना समय नहीं हुआ और मेरे लिए बहुत मुश्किल है कि मैं गुलाम अहमद करके नाम लूं। 1964 में मेरी बहिन के साथ इनका निकाह हुआ, मौलाना जलालुद्दीन साहब शम्स ने निकाह पढ़ाया। (हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी उन दिनों बीमार थे) इनके तीन बेटे और दो बेटियाँ हैं तथा दो बेटे वक्फे ज़िन्दगी हैं, मिर्ज़ा फजल अहमद रब्वा में नाज़िर तालीम हैं और मिर्ज़ा नासिर इनाम यहां UK के जामिया के प्रिंसिपल हैं और मिर्ज़ा एहसान अहमद अमेरिका में हैं। यद्यपि सांसारिक नौकरी करते हैं लेकिन वहां भी जमाअत की सेवा कर रहे हैं। नेशनल मजलिस आमला में सेक्रेटरी माल हैं। इसी प्रकार अफसर जलसा गाह हैं। उनकी एक बेटी अमतुल वली ज़बदा हैं और दूसरी अमतुल उला ज़ोहरा हैं जो मीर महमूद अहमद साहब, यह मीर मसूद अहमद साहब के बेटे हैं, उनकी बीवी हैं, और वह भी वक्फे जिंदगी हैं और आजकल नाज़िर सेहत हैं।

मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब, जो इनकी सेवाएँ हैं, नाज़िर तअलीम के रूप में इन्होंने काम किया, एडिश्नल नाज़िर इस्लाह व इरशाद स्थानीय के रूप में कई वर्षों तक काम किया। नाज़िर दीवान के तौर पर काम किया बल्कि जब तक नाज़िर आला नहीं बनाए गए थे यह 96 से लेकर 2018 तक नाज़िर दीवान के तौर पर रहे। 2012 से 2018 तक सदर मजलिस कारपर्दाज़ के रूप में भी थे। फिर मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहब के निधन के पश्चात इनको मैंने नाज़िर आला व अमीर मुकामी तथा सदर सदर अन्जुमन अहमदिय: बनाया। चतुर्थ ख़िलाफ़त में कई बार इनको कायम मकाम नाज़िर आला तथा कायम मकाम अमीर मुकामी बनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी प्रकार मजलिस वक्फे जदीद के सदस्य थे तथा 2016 से 2018 तक सदर मजलिस वक्फे जदीद भी रहे। अन्सारुल्लाह में विभिन्न पदों पर मनोनीत रहे, फिर नायब सदर सफे दोयम भी रहे, फिर नायब सदर बने, फिर 2004 से 2009 तक सदर अन्सारुल्लाह पाकिस्तान के रूप में सेवा का सुअवसर मिला। खुद्दामुल अहमदिया में मुहतमिम के रूप में काम किया फिर नायब सदर खुद्दामुल अहमदिया मर्कज़िया रहे। इसके बाद फिर 75 से 79 तक सदर खुददामुल अहमदिया मर्कज़िया भी रहे तथा एडीटर रिव्यू फ रिलीजन्स भी हुए। इन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीस सालिस के प्राईवेट सैक्रेट्री के रूप में भी सेवा की। ख़िलाफ़त लाईब्रेरी कमैटी के सदर थे, बयूतुल हम्द सोसाईटी रबवा के सदर थे, फज़्ले उमर फाउंडेशन के डायरैक्टर थे। इसी प्रकार जलसा सालाना में इनको कई साल तक सेवा का अवसर मिला। जब तक रबवा में जलसे होते रहे, नायब अफसर जलसा सालाना के रूप में तथा नाज़िम मेहनत रहे। नाज़िम मेहनत का बड़ा मेहनत वाला काम होता है और ऐसे लेबर से संपर्क होता है जो गैर अहमदी भी होती है और रोटी पकाने वाले नानबाई और पेड़े बनाने वाले बिगड़े हुए भी होते हैं उनको सही तरह काबू रखना जलसे का एक बड़ा काम होता है। अल्लाह ताला के फजल से उनको बड़े बेहतरीन रंग में इस सेवा की तौफीक मिली और तबर्रुकात कमैटी के सदर रहे। रजिस्टर रिवायात-ए-सहाबा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कमैटी के सदस्य थे, मजलिस उफता के सदस्य थे, तारीख अहमदियत कमैटी के सदस्य थे, सैक्रेट्री ख़िलाफ़त कमैटी थे। निगरान मैनेजिंग डायरैक्टर अलशिर्कतुल इस्लामिय: भी रहे। नज़ारत के साथ साथ यह बहुत सारे काम और कमेटियां भी उनके सुपुर्द थीं। 1989 में इनको तथा मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहब को तथा दो अंजुमन के कार्य कर्तओं को 298 सी के अंतर्गत कुछ दिन असीर राहे मौला रहने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लाहोर में 28 मई 2010 की जो दुर्घटना हुई थी, जहाँ बहुत सारी शहादतें हुई थीं अहमदियों की, उस समय नाज़िर आला ने जो प्रतिनिधि मंडल लाहौर भिजवाया था, जमाअत की संतुष्टि के लिए, शहीदों के परिवारों से मिलने के लिए, रोगियों को देखने के लिए, उनके अमीर मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब थे। शहीदों को अभी हस्पताल ले जाया जा रहा था कि ये लाहौर पहुंच गए थे और अगले लगभग दो सप्ताह तक इन्होंने लाहौर में ही निवास किया और जो व्यवस्था थी इनकी, स्वयं निगरानी करते रहे। दारुज्ज़िक्र में यह प्रतिनिधिमंडल गया और बड़े विवेक और महनत से उन्होंने समस्त काम पूरे किए। और घायलों के इलाज की निगरानी भी करते रहे और शहीदों के परिवारों के घरों में भी गए। दारुज्ज़िक्र में इसी दिन मजलिस आमला का इज्लास बुलाया और नए अमीर का भी वहां ऐलान किया। मगरिब और ईशा की नमाजें आपने वहीं पढ़ाई ताकि लोगों को यह हौसला रहे कि घटना होने के बाद यह नहीं कि मस्जिद खाली कर देनी है। और जब ये मरीज़ों को हस्पताल में पूछने के लिए गए तो उस समय के गवर्नर सुलेमान तासीर साहब वहाँ आए, उन्होंने तअज़ियत (पुरसा) की, मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब ने उनका ध्यान इस ओर आकर्षित कराया कि जो आक्रमण हुआ है वह इस कारण से हुआ है कि अहमदिया जमाअत के विरुद्ध घृणात्मक सामग्री बांटी जा रही है तथा गवर्नर के रूप में आपका यह कर्तव्य है कि इस ओर ध्यान दें। इसी प्रकार प्रादेशिक मंत्री जो अल्पसंख्यकों के थे, जावेद माईकल साहब, वे भी तअज़ियत के लिए आए। यहाँ भी इन्होंने बड़ी बहादूरी से मंत्री जी को कहा कि आप तअज़ियत के लिए आए हैं, इसके लिए हम आपके आभारी हैं किन्तु यह बात स्पष्ट रहे कि हम स्वयं को कदाचित अल्पसंख्यक नहीं मानते, हम मुसलमान हैं। जिस पर मंत्री ने कहा कि वास्तव में मैं मानवीय अधिकारों का भी मंत्री हूँ और मैं इस दृष्टिकोण से भी आया हूँ।

मिर्ज़ा गुलाम अहमद ने उनसे कहा कि मंत्रीमंडल में आपको आवाज़ उठानी चाहिए तथा जमाअत के विरुद्ध जो अभियान है, सरकार को उसे समाप्त कर देना चाहिए। बहरहाल यह तो उनको उनके कर्तव्यों की ओर ध्यान दिलाया था वास्तव में हमारी नज़र हमेशा अल्लाह तआला पर ही है और उसी ने यह हालात ठीक करने हैं, इंशाअल्लाह। 29, 30 मई को उन्होंने प्रैस कान्फ्रंस भी की। 2 जून को एक्सप्रेस न्यूज़ के लाइव प्रोग्राम में पॉइंट ब्लैक में रात 11 बजे से 12 बजे टक वे सम्मिलित रहे। स्विस नैशनल टी वी और बी बी सी और वाईस ऑफ अमरीका तथा सहारा टी वी चैनल फाईव तथा दुनिया टी वी इत्यादि, सबको इन्टरव्यू दिया। बहरहाल यह प्रतिनिधिमंडल फिर 12 जून तक वहां रहा और फिर वापस आ गया। इसमें इन्होंने स्पष्ट रूप से इनको कहा था कि हम मुसलमान हैं और कोई हमारे से, हमारा मुसलमान होना नहीं छीन सकता।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रह. ने अपने एक खुत्ब: में अपना सपना सुनाया था। आप कहते हैं कि मैं सोच रहा था कि मुझे अपनी व्यस्तताएँ बढ़ानी चाहिएँ, तो रात को सपने में मियाँ अहमद को देखा जो सदैव बड़ा अच्छा विमर्श दिया करते थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे फरमाते हैं कि कुर्आन-ए-करीम के विषय में भी उन्हीं की सलाह थी कि बजाए इसके कि तफसीर-ए-सगीर के पीछे नोट्स लिखूँ, मैं अपना नया अनुवाद करूँ और आप फरमाते हैं कि अलहम्दु लिल्लाह, ख़ुदा तआला ने इस अनुवाद की तौफीक अता फरमाई तथा अनेक समस्याओं का इसके द्वारा निवारण हुआ तथा शेष फिर लम्बा सपना है जिसमें मियाँ अहमद के विमर्श का वर्णन है। इसमें वर्णन है कि किस प्रकार उन्होंने शादी ब्याह के संबंध में

और लड़कों की नोकरियों के लिए कहा कि प्रस्ताव होने चाहिए सपने में ही मियां अहमद ने हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे को वे बताईं कि आप इसमें सहायता कर सकते हैं।

(उद्धृत अल-फज़ल इंटर नेशनल 19 से 25 जनवरी 2001 ई पृष्ठ 5)

एक पत्र में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने इनको लिखा कि अज़ीज़म अहमद सल्लमहुल्लाह, अस्सलाम अलैकुम, आपकी कठिनाई का पत्र मिला। मैं आपके लिए विनयता के साथ दुआएँ करता हूँ। आपकी प्रकृति में ख़ुदा तआला ने नेकी और सच्चाई रखी है और इन दो विशेषताओं वाले इंसान को अल्लाह तआला कभी नष्ट नहीं करता। अल्लाह तआला आपको अधिक से अधिक आध्यात्मिक प्रगतियाँ अता फरमाता रहे तथा जन्नत के समान आत्मा की संतुष्टि प्रदान करे।

इसी प्रकार एक और पत्र में उन्होंने फ़रमाया कि अपनी दुआओं में याद रखता हूँ आप सब का अधिकार भी है और दीन की खिदमत में मेरे सुल्तान-ए-नसीर हैं। अल्लाह तआला हमेशा अपनी सुरक्षा में रखे। सेहत दे और कभी कोई चिंता और संकट न आए। और फिर लिखा कि मुझे भी दुआओं में याद रखें। मेरी बहुत इच्छा है कि अह्मदियत को लोग बहुत जल्दी स्वीकार करें। और फिर फ़रमाया कि mta का हथियार भी सारो दुनिया में चल रहा है और मेरी इच्छा को पूर्ण कर रहा है अच्छे अच्छे प्रोग्राम भिजवाएं ताकि नूर ही नूर हो जाए। शैतान रमजान में पूरी तरह जकड़ा जाए।

इनकी पत्नि अमतुल कुद्दूस साहिबा कहती हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि। जब बीमार थे तो रात को वहाँ जाकर प्रतिदिन ड्यूटी दिया करते थे। इसी प्रकार हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमुल्लाहु तआला के ज़माने में भी ख़िलाफ़त से अत्यधिक जुड़े हुए थे। हुज़ूर इन पर बड़ा भरोसा करते थे। 1974 में लम्बे समय तक दिन रात वहीं रहे, यह भी तथा मिर्ज़ा $खुर्शीद अहमद साहब भी और घर आने की अनुमति नहीं थी।

1973 और 74 ई में विशेषरूप से और इसके बाद में जब खुद्दामुल अहमदिया के सदर थे उस समय भी यह हुज़ूर के साथ काम करते थे। एक लम्बे समय तक तो घर आते ही नहीं थे। पहले भी सुबह के गए रात दस बजे घर आते थे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रह. ने इनको एक सम्मान प्रदान किया कि एक इज्तिमा के अवसर पर जब इन्होंने विनती की कि हुज़ूर एहद दोहरवाएँ तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रह. ने फरमाया कि तुम दोहराओ तथा आदेश देकर इनसे एहद दोहरवाया मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब की वफात पर मैंने वर्णन किया था कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने कहा था कि यह जो दो व्यक्ति वे मेरे बड़े वफादार हैं और हर खिलाफत के वाफदार हैं। इन्होंने मुझे लिखा था लेकिन ज़बानी भी बता चुके थे। उस समय क्योंकि उनको संकोच था इसलिए अपना नाम नहीं लिखा था इसलिए मैंने भी जुमा पे नहीं बताया था। केवल मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब का ही बताया था। वास्तव में मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब और मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब के बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने फ़रमाया था कि ये हर खिलाफत के वफादार हैं और मेरे भी वफादार हैं। जब हुज़ूर की अंगूठी खो गई थी तो उसकी तलाश करने के लिए उन्हीं को बुलाया और यह कहा करते थे कि पहले हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने मेरा नाम लिया। अहमद और फिर खुर्शीद यह दोनों मेरे वफादारों में से हैं और हर खिलाफत के वाफदारों में से हैं।

फिर इनकी पत्नि कहती हैं कि रात की नफ्लों में इतना रोते थे कि घर गूँज रहा होता था जिसमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए, वर्तमान खलीफ़ा के लिए, जमाअत के लिए, माँ बाप के लिए, बहिन भाईयों के लिए, बीवी बच्चों के लिए, रिश्तेदारों के लिए दुआएँ करते थे। अपनी नफ्लों में सूर: फातिह: की कुछ आयतों को बार बार दोहराते रहते थे। छोटे से छोटा तोहफा भी यदि इनको कोई देता तो उसका आभार करते, या तो उसको भेंट के रूप में लौटाते या घर जाकर उसका धन्यवाद करते या पत्र लिख कर आभार प्रकट करते। एक विशेषता यह थी कि जो काम भी उनको दो, जब तक उसको पूरा न कर लेते चैन से नहीं बैठते थे। ज्ञान भी बहुत था, स्मरण शक्ति भी अच्छी थी। कोई रिवायत हो अथवा पुराना रिशता हो, इनसे पूछते तो इनको याद होता था। और कहती हैं मुझे सैर करने का शौक था तो माली हालात चाहे अच्छे हों या न हों स्वास्थ्य ठीक हो या न हो पत्नी के अधिकार पूर्ण करने के लिए सैर पर अवश्य ले जाया करते थे। उनकी पत्नी मेरी बहन ने लिखा है अब्दुर रहमान अनवर साहिब की पत्नी बताती हैं कि अब्दुर रहमान अनवर साहिब ने स्वप्न में देखा कि उनकी माता के घर के द्वार पर गुलाब की अत्यंत सुन्दर दो बेलें चढ़ रही हैं जिनमे बहुत ही सुन्दर फूल लगे हैं। अल्लाह तआला के फज़ल से यह स्वप्न तो सच्चा हुआ। उनकी पत्नी लिखती हैं कि हर आमदनी पर पहले चंदा अदा करते थे इसके बाद उसको प्रयोग में लाया जाता था। उनकी पत्नी को भी हमारी माता की ओर से या पिता की ओर से जो संपत्ति से भाग मिला था उसकी पहले वसीयत अदा की हिस्सा संपत्ति अदा किया और जो आमदनी होती थी उसका हिस्सा संपत्ति अदा कर देते थे और फिर मुझे बताते कि मैं चन्दा अदा कर आया हूँ। इस प्रकार उन्होंने मेरी सारी संपत्ति का चन्दा चुका दिया और मुझे कोई बोझ भी नहीं पड़ा। बेटे बेटी को घर बना कर दिया और उनकी वसीयत भी खुद उतार दी।

फिर बहुत से लिखने वालों ने मुझे लिखा तथा मैं भी देखता ही रहता था, सदैव एक साथ होते थे। हमारी बहिन लिखती हैं कि मिर्ज़ा दाऊद अहमद साहब की पत्नि कहा करती थीं कि अहमद और खुर्शीद को यदि देख लूँ कि एक साथ जा रहे हैं तो मुझे लगता था कि जमाअत में कोई समस्या हो गई है कि ये दोनों एक साथ जा रहे हैं। प्रत्येक आपात कालीन स्थिति में बड़े साहस से, बहादुरी से, विवेक के साथ काम किया करते थे। ख़िलाफ़त का आज्ञा पालन तो था ही। यहाँ जलसे पर, दुर्बलता अधिक थी, इनको मैंने कहा कि सोटी लिया करें तो तुरन्त ही इन्होंने सोटी लेनी शुरु कर दी कि अब तो आदेश हो गया है, अब लेनी पड़ेगी, छड़ी प्रयोग करनी पड़ेगी।

कुछ वर्ष पूर्व मैंने कहा था कि नाज़िर उन जमाअतों में जाएँ, प्रत्येक घर में जाकर मेरा सलाम पहुंचाएँ, इनके लिए सिन्ध क्षेत्र का भाग आया। कहती हैं इनकी पत्नि कि वापस आए तो लंगड़ा कर चल रहे थे, तो मैंने पूछा तो इन्होंने कहा कि एक घर की सीढ़ी से गिर गया था। जब फज़ूले उमर हस्पताल में दिखाया गया तो पाँव की छोटी उंगली की हड्डी टूटी हुई थी तथा दूसरे पाँव का टखना टूटा हुआ था हलका सा। कहती हैं- मैंने इनसे पूछा कि आपको दर्द नहीं होती थी। कहने लगे- दर्द तो अनुभव होती थी किन्तु क्यूँकि ख़लीफ-ए-वक़्त का पैगाम घर घर पहुंचाना था इस लिए ग्यारह दिनों में इस कठिनाई का आभास नहीं हुआ तथा अपना काम पूरा करके आए। इनके बड़े बेटे लिखते हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की हिजरत के बाद हुज़ूर के खुत्ब: की कैसिट सबसे पहले आपके पास आती थी तथा बड़ी व्यवस्था के साथ आप सबको एकत्र करते और हुज़ूर का खुत्ब: सुनाते थे। फिर एम.टी.ए. आने के बाद भी खुत्बात सुनने का विशेष प्रबन्ध किया करते थे तथा इस बात को सुनिश्चित करते थे कि सारे घर के लोग यह खुत्ब: सुनें, यहाँ तक कि जो घर में काम करने वाले लोग हैं अथवा बाहर नौकर हैं उनके भी सुनने के लिए इन्होंने विशेष व्यवस्था कर रखी थी।

लाऊड स्पीकर लगाया हुआ था या टीवी लगा कर दिया हुआ था जब यह लाहोर गए हैं तो वहां की एक घटना उनके बेटे लिखते हैं कि जब रात में हॉस्पिटल गए तो वहां पर बहुत भीड़ थी और एम्बुलेंस वाले मुंह मांगी कीमत मांग रहे थे तो वहां उन्होंने ऊंची आवाज़ में ऐलान किया कि सब प्रबंध सदर अंजुमन अहमदिया करेगी। सब की तद्फीन रब्वा में होगी सारे जनाज़े वहां लेकर जाएँगे इंशाअल्लाह, और अगर कोई अपने स्थानीय निवास पर लेकर जाना चाहता है तो उसको अनुमति है बहरहाल इससे लोगों में संतुष्टि पैदा हुई। हर घायल व्यक्ति के घर पर गए। शहीदों के घरों में गए उनके घरों में खाने का प्रबंध किया अगर कोई कमाने वाला नहीं था तो उनके लिए प्रबंध करवाया। उस समय कुछ सूचनाएं थीं कि कुछ लोग उनके पीछे लगे हैं, और एजेंसियों की ओर से सूचना थी कि उनकी जान को खतरा है। तो उनको वहां से वापस बुलाया गया। लेकिन 28 मई से जो अगला जुमा था यह फिर वहां गए और वहीँ दारुज्ज़िक्र में जाकर उन्होंने स्वयं जुमा पढ़ाया ताकि जमाअत के लोगों को भी हौसला रहे। गरीबों का बहुत ख्याल रखते थे पुराने दोस्तों का बड़ा ख्याल रखते थे। उनके बचपन के एक सहपाठी थे जो पढ़ाई पूरी नहीं कर सके और उन्होंने घरों में रंगों (पेंट) का काम शुरू कर दिया।उसका बड़ा ध्यान रखते थे। उसकी मृत्यु के बाद उसके बच्चों का ध्यान रखा। 1889 मे जब यह गिरफ्तार हुए हैं तो उसका कारण यह हुआ थी कि खुद्दामुल अहमदिया का इज्तेमा हो रहा था और उस समय मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब नाज़िर उमूर-ए-आमा थे वे रब्वा से बाहिर थे यह उनके क़ायम मुकाम थे। मजिस्ट्रेट ने उनको बुलाया और आदेश दिया कि इज्तेमा बंद करो उन्होंने कहा कि आप लोगों ने इज्तेमा करने की हमें लिखित रूप से आज्ञा दी है अब बंद करने की भी लिखित रूप से आज्ञा दे दें, हम बंद कर देंगे। उन्होंने कहा मौखिक आदेश है तुम बंद करो। इन्होंने कहा कि फिर मौखिक पर हम बंद नहीं करेंगे।

अत: शाम को मिर्ज़ा खुर्शीद साहिब भी आ गए उनको बुलाया। उन्होंने भी यही उत्तर दिया जिसके परिणाम स्वरूप जैसा कि मैंने कहा उन्होंने कुछ दिन असीरी (क़ैद) मे भी व्यतीत किए। उनको गिरफ्तार कर लिया गया और जेल मे दाल दिया

गया। उनकी बेटी कहती हैं कि हमारे अब्बा ने पूरी कोशिश की कि हमेशा खिलाफत के वफादार रहें। और हमें भी यही शिक्षा दी। कहती हैं कि एक बार अब्बा ने मुझे बड़ी तड़प के साथ दुआ के लिए कहा बल्कि कई दिन कहते रहे। मुझे नहीं पीटीए कि मामला क्या था। बहरहाल ऐसा लगता था कि खलीफ़ा-ए-वक़्त की ओर से हल्की सी नाराज़गी का मामला था, जिसकी वजह से अब्बा की नमाज़ों मे इतनी तड़प होती थी जिसका मेरे दिमाग पर भी असर हुआ और मेरी हालत भी वैसी ही हो गई।

फिर जब ख़लीफतुल मसीह राबे रह की हिजरत हुई उस समय इनकी वालिद: साहिबज़ादी सय्यद: नसीरा बेगम साहिबा बड़ी बीमार थीं और काफी हालत खराब थी और जिस रात हिजरत थी उस रात लग रहा था कि आज इनकी वालिद: की अन्तिम रात है परन्तु आप वहाँ जमाअत के कामों में व्यस्त थे, हिजरत के कामों में लगे हुए थे इस लिए वालिद: के कमरे तक भी नहीं गए तथा जमाअती कामों में व्यस्त रहे।

इसी प्रकार खिलाफत खामिसा में मेरे साथ भी सदैव आज्ञा पालन और निष्ठा का सम्बंध रहा। बल्कि अपने बेटे को पूछने पर यही कहा कि तुम एखते नहीं हो खिलाफत की सच्चाई कि अल्लाह तआला की सहायता किस प्रकार खिलाफत खामिसा के साथ हैं। उनके एक बेटे लिखते हैं कि हमें नमाज़ के लिए जगाया करते थे। सामान्यता कुछ सख्त थे परंतु अंतिम समय इतने दर्द के साथ जगाते थे कि उससे प्यार प्रकट होता था। उनको और उनकी पत्नी को जो भी खलीफाओं के पत्र आए उनके बेटे कहते हैं कि उन समस्त पत्रों की काफिया बना कर और फाइल बना कर हम सब बच्चों के सुपुर्द कर दी कि यह हमारी ज़िंदगी की पूंजी है। इन पत्रों को अपने पास रखना।

मिर्ज़ा अनस अहमद साहब वर्णन करते हैं कि जब उनकी मृत्यु हुई मैं ख्वाब देख रहा था कि भाई खुर्शीद और मियां अहमद अल्लाह ताला के पास चले गए हैं और उनकी मुलाकात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से हो रही है और कहते हैं कि उस समय ख्वाब में मेरे दिल में भी इच्छा पैदा हुई कि अल्लाह करे मेरी मुलाकात भी इसी तरह हो जाए। अत: मैंने निवेदन किया कि हे अल्लाह मुझे भी अपने समीप बुला ले। तो फिर अल्लाह ने फरमाया कि तुम आगे आ जाओ। कहते हैं मियां अहमद से मेरा पुराना संबंध था और हम लगभग हमउम्र थे। उनकी नेकियों को देखता हूं तो लज्जित होता था कि अल्लाह ताला मुझे भी ऐसा अवसर दे। कहते हैं कभी किसी बात पर मुझसे क्रोधित होते थे तो हमेशा वह मुझे माफ करने में पहल करते थे। फिर इसी प्रकार उन्होंने उनकी नमाज़ों की हालत के बारे में लिखा है कि जब उनको नमाज पढ़ते देखता तो ऐसे दर्द के साथ नमाज पढ़ रहे होते थे कि मुझे रश्क पैदा होता था। अत्यंत बुद्धिमान और ज़िम्मेदार थे। पांचों नमाज़ों के लिए मस्जिद में जाना, गरीबों की सहायता करना और उनके काम आना, अपनी शक्तियों को अल्लाह के मार्ग में व्यय करने की तौफ़ीक़ उन्होंने पाई। चौधरी हमीदुल्लाह साहब ने भी यही लिखा है कि बड़े समझदार और परामर्श देने वाले थे और अधिकतर परामर्श की मजलिसों में आपकी राय ही निर्णायक होती थी। सिलसिले के लिटरेचर और इतिहास से गहरा परिचय था। जब भी अवसर मिलता सिलसिले की खिदमत में आगे होते। 74 के दंगों में कई महीनों तकहाज़रा का की भरपूर सहायता की हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस का के साथ रहे। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस के बाहर देशों के दौरों में सफर में साथ रहे। एक बार मजलिस खुद्दामुल अहमदिया मरकज़िया के नुमाइंदे के तौर पर हुज़ूर के प्रतिनिधिमंडल में सम्मिलित हुए।

क़ादियान के कारकुन अकरम साहब लिखते हैं कि मैंने मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब की मृत्यु पर उनको अफसोस का फोन किया तो उन्होंने बड़े दर्द से मुझे कहा कि मेरे लिए क़ादियान में स्वयं भी दुआ करना और दूसरे बुजुर्गों को भी दुआ के लिए कहना क्योंकि मियां खुर्शीद की मृत्यु के बाद अपने आप को अकेला महसूस करता हूं। अल्लाह ताला मुझे नई जिम्मेदारियों को यथा संभव अदा करने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस प्रकार दुआ के लिए भी कहते रहते थे जब क़ादियान का सफर करते तो दरवेशों के घरों में जाते और इसी प्रकार वहां के दरवेशों की विधवाओं और यतीमों की सेवा करने की कोशिश करते। मुकामात मुक़द्दसा (पवित्र स्थानों)का उनको बड़ा ज्ञान था। अकरम साहब ही यह कहते हैं कि क़ादियान पहुंचकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जहां दुआ किया करते थे अक्सर वहां खड़े होकर नफिल नमाज पढ़ा करते थे और मुझे भी उपदेश किया करते थे कि आप लोग सौभाग्यशाली हैं इन स्थानों में, पवित्र स्थानों में रहते हैं। इसलिए यहां बहुत दुआएं किया करें, खुद्दामुल अहमदिया के सदर के तौर पर उनकी बड़ी खिदमतें हैं। हर जगह खुद्दामुल तक पहुंचे। मुबश्शिर गोंदल साहेब ने भी लिखा है कि एक बार उनका सिंध का दौरा था तो कुछ स्थानों पर सवारी नहीं थी, कार भी नहीं जा सकती थी तो पैदल सफर करके जंगलों में खुद्दाम तक पहुंचे जिसका खुद्दाम पर बड़ा अच्छा असर हुआ और अब तक वे याद करते हैं।

इसी प्रकार असफंद यार मुनीब साहिब जो इतिहास विभाग के इंचार्ज हैं वे लिखते हैं कि तारीख़ अहमियत के लिए भी बहुत लाभकारी व्यक्ति थे। परामर्श समिति के सदस्य थे, अत्यंत ध्यानपूर्वक इतिहास के दस्तावेज़ों को देखते थे और अत्यंत कीमती और लाभकारी परामर्श देते और मार्गदर्शन करते थे। जमाअती तारीख से संबन्धित घटनाओं की पृष्ठभूमि तथा अन्य दूसरी बातों से पूर्णता परिचित थे और मोहम्मद दीन नाज़ साहेब एडिशनल नाज़िर इस्लाह इरशाद तालीमुल कुरान कहते हैं कि जब नाज़िर आला बने तो मैं उनके कमरे में गया तो यह नज़ारत उलिया की कुर्सी पर बैठे हुए थे और हालत देखने लायक थी कि आंखों से बह रहे थे, दुआओं की भावनाओं में डूबे हुए थे और बड़ी विनम्रता से उन्होंने मुझे भी दुआ के लिए कहा।

ज़ाहिद कुरेशी साहब कहते हैं कि यह जब खुद्दामुल अहमदिया के सदर थे तो कायद खुद्दामुल अहमदिया लाहौर ने मुझे किसी काम के लिए उनके पास भेजा मैं ऐवाने महमूद मैं मुलाकात के लिए दफ्तर में गया और कागज़ात उनके सुपुर्द किए। गर्मियों का मौसम था और दोपहर का समय था तो कागज़ात लेने के बाद उन्होंने फरमाया कि खाना खा लिया है? मैंने कहा कि अभी काम से फारिग होकर मैं दारुज़्ज़ियाफ़त में जाकर खाता हूं। उन्होंने कहा कि नहीं मेरे साथ चलो, थोड़ी देर बैठो अभी प्रबंध हो जाएगा। तो कहते हैं मैं समझा कि यहीं ऐवाने महमूद में प्रबंध हो जाएगा। थोड़ी देर बाद बाहर आए, साइकिल निकाली और फिर कहा कि मेरे पीछे बैठो। कहते हैं हम चल पड़े। मैंने रास्ते में कहा कि मैं दारुज़्ज़ियाफ़त चला जाता हूं रास्ते में दारुज़्ज़ियाफ़त आता है तो उन्होंने कहा नहीं पीछे बैठे रहो। बहुत गर्मी में साइकिल पर घर ले गए और अपने घर में जाकर वहां खाना खिलाया और फिर मुझे विदा किया। जब सदर खुद्दामुल अहमदिया थे तो हर ख़ादिम से उनका व्यक्तिगत संबंध था।

इसी प्रकार बहुत सारे लोगों ने लिखा है कि हमने बहुत सारे काम के तरीके उनसे सीखे। डॉक्टर सुल्तान मुबश्शिर साहिब भी लिखते हैं कि बहुत सारे काम के तरीके उनसे सीखे। उनको बड़ी गहराई में जाकर काम करने की आदत थी, डॉक्टर सुल्तान मुबश्शिर साहिब लिखते हैं कि 1984 के ऑर्डिनेंस के बाद वफाक़ी अदालत में जो अपील की गई उसके प्रबंध के ज़िम्मेदार मियां अहमद साहब थे। कहते हैं मुझे याद है कि मियां साहिब अचानक ऐवाने महमूद में, जहां विनीत बैडमिंटन खेल रहा था, स्वयं तशरीफ़ लाए और कहने लगे कि लाहौर अदालत में पुस्तकों की आवश्यकता होती है जो यहां लाइब्रेरी से ले जानी होंगी और यह आपकी ज़िम्मेदारी है कि वहां लेकर जाया करें और जिन पुस्तकों की आवश्यकता होती थी वह लाहौर से फोन पर रब्बा लिखवा दी जाती थीं और फिर लाइब्रेरी के स्टाफ के साथ वे स्वयं परिश्रम करते, प्रयत्न करते और किताबें निकलवाते। यह नहीं कि केवल कह दिया और चले गए बल्कि उनको बैठकर स्वयं काम करवाने की आदत थी। यतीमों और विधवाओं का ख्याल रखने वाले थे। डॉक्टर साहब कहते हैं कि आज ही मेरे पास आउटडोर में एक महिला बुशरा साहिबा यहां रब्बा की रहने वाली हैं, शुगर और ब्लड प्रेशर की मरीज आईं, उनके रिजल्ट देखकर मैंने उन्हें कहा कि ख़ुदा के फज़ल से अब तो आप की रिपोर्ट नॉर्मल आई है। यह सुनकर रो पड़ी तो मैंने आश्चर्य से उन्हें देखा तो उन्होंने रोती हुई आवाज़ में कहा कि हां डॉक्टर साहब मेरी शुगर तो ठीक हो गई है मगर मेरा मुफ्त इलाज कराने वाले दोनों लोग मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहब और मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब इस दुनिया से चले गए। कहते हैं मैंने उन्हें तसल्ली दी कि ख़ुदा के फजल से जमाती निज़ाम के अंतर्गत यह इलाज जारी रहेगा। मगर वह बहुत याद करती रहीं और रोती रहीं।

अताउल मुजीब राशिद साहेब इमाम मस्जिद फजल लंदन कहते हैं कि 1973 ईस्वी के अंत में जब हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रहमतुल्ला ने मुझे मज्लिस शूरा खुद्दामुल अहमदिया के परामर्श के बाद सदर मजलिस खुद्दामुल अहमदिया मुकर्रर किया तो मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब उस समय नायब सदर थे मैंने भी उन्हें अपने आमला में उनके व्यापक अनुभवों के कारण नायब सदर के तौर पर प्रस्तावित किया। मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब अपने ज्ञान और अनुभव और अपनी उम्र और मुकाम के दृष्टिकोण से मुझसे बहुत सीनियर थे लेकिन जब आपको नायब सदर मुकर्रर किया गया तो अताउल मुजीब साहिब कहते हैं कि उन्होंने अत्यंत

विनम्रता से हर काम में भरपूर समर्थन किया और किसी पड़ाव पर भी तनिक भी यह प्रकट नहीं होने दिया कि वह मुझसे बहुत सीनियर हैं।

एक शाहिद अब्बास साहिब हैं, मलेशिया से लिखते हैं कि 2005 में मैंने बैत की और मरकज़ की यात्रा के लिए गया तो दफ्तरों में मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब तशरीफ ला रहे थे। तो मेरे साथी मोअल्लिम दानियाल साहिब ने मुझे कहा कि यह ख़लीफ-ए-वक्त के बड़े करीबी रिश्तेदार हैं, उनको दुआ के लिए कह दें। कहते हैं मैं उनके पास गया और कहा कि मैं शिया फिरके से जमात अहमदिया में सम्मिलित हुआ हूं मेरे लिए दुआ करें। उन्होंने मुझे गले लगाया और मेरा हाथ मजबूती से पकड़ा और बड़े जोश के साथ कहा कि मैं आपको एक ऐसी हस्ती क्यों ना बता दूं जिनको मैं खुद भी दुआ के लिए निवेदन करता। हूं तो मैंने पूछा वह कौन हैं तो उन्होंने कहा कि ख़लीफ-ए-वक्त और फरमाया कि ख़लीफ-ए-वक्त को दुआ के लिए लिखा करो। यह नए अहमदी कहते हैं कि मैंने उनकी आंखों में ख़लीफ-ए-वक्त की जो मोहब्बत और जोश देखा था, वह देखने योग्य था वह क्षण मेरी आंखों में कैद होकर रह गए हैं।

अंजुम परवेज़ साहिब यहां अरबी डेस्क के मुबल्लिग हैं वे लिखते हैं कि चौधरी मोहम्मद अली साहब ने बताया कि एक दिन दोपहर को बहुत गर्मी में साइकिल पर मियां अहमद किसी व्यक्ति को तलाश कर रहे थे। जो रंग रोगन करने वाला था। उन्होंने पूछा कि इतनी गर्मी में किसको ढूंढ रहे रहे हैं तो उन्होंने कहा कि उस व्यक्ति को मैंने एक गलत होम्योपैथी दवाई दे दी है और अब उसकी तलाश कर रहा हूं कि कहीं वह खा न ले। तो सही दवाई उस तक पहुंचा दूं। इसलिए मैं खुद उसको तलाश करके उसको दवाई पहुंचाने की कोशिश कर रहा हूं और वह मिल नहीं रहा।

इसी प्रकार जो भी कर्तव्य और बहुत सारी जगहों पर जो सेवाएं उनके सुपुर्द थीं वह बड़े उत्तम ढंग से पूर्ण करते रहे।

बहुत सारे वाक्यात लोगों ने लिखे हैं। इसी प्रकार जो भी दफ्तरों में उनके साथ काम करने वाले थे वे कहते हैं कि अत्यंत नरमी से और प्यार से और मोहब्बत से काम करवाते थे। दुखी और कठिनाइयों में पड़े हुए लोगों और असहायों से हर संभव हमदर्दी करने वाले और उनकी कठिनाइयों को दूर करने वाले और बड़े विवेकी और समझदार थे। ऐसी ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा थी के तुरंत मामले की गहराई तक पहुंच जाते थे और फिर जैसा कि मैंने पहले कहा कि तुरंत उस पर कार्यवाही करके उनको काम पूरा करने की आदत थी।

इसी तरह एक बार कुछ लड़के दफ्तर में आए, यह मृत्यु से कुछ दिन पहले की बात है मरकज की सुरक्षा के जो कुछ कार्यकर्ता हैं उन्होंने उनसे सख़्ती की थी, कोई मार पिटाई हुई थी या केवल अति की थी। वह शिकायत लेकर आए थे किसी को अधिक चोट भी लगी हुई थी। इस पर उन्होंने कहा कि तुमने हॉस्पिटल जा कर दिखाया है? उन्होंने कहा कि नहीं। तो उनको कहा कि पहले जाकर इलाज करवाओ आज दफ्तर में छुट्टी है जब दफ्तर खुलता है तो मैं इंशाअल्लाह सारी कार्रवाई करूंगा और जो भी कुसूरवार है, चाहे वह ओहदेदार हो उसको सजा मिलेगी और तुरंत वहां कार्यवाही भी कर दी और लड़कों को भेजा कि पहले अपना अस्पताल से जाकर इलाज करवा कर आओ। दीवान में इकबाल बशीर साहिब हैं, वह कहते हैं कि जब मियां अहमद साहब को नाज़िर दीवान बनाया गया तो दफ्तर का स्टाफ छोटा था और केवल दो क्लर्क थे और एक सहायक था। काम जब अधिक हो जाता था तो अधिकतर यह होता था कि मियां अहमद साहब हमारे साथ आकर बैठ जाते थे और डाक की आमद व रवानगी आदि का काम हमारे साथ किया करते थे।

रियाज महमूद बाजवा साहेब मुबल्लिग रहे हैं, रिटायर हो गए हैं, कहते हैं कि एक दिन मैं दफ्तर में बैठा था तो बातचीत के दौरान मियां साहिब के आवाज़ मे कुछ सख़्ती आ गई और सामान्यता ऐसा हो भी जाता है। और मुझे इस पर कोई अफ़सोस और आश्चर्य भी नहीं था। मैं घर आ गया शाम हुई तो द्वार पर दस्तक हुई मैंने दरवाजा खोला तो मियां साहब खड़े थे उनको देख कर हैरानी हुई। वह कहने लगे कि आज आपसे दफ्तर में ऊंची आवाज से बात हुई थी इस पर आप से क्षमा मांगने आया हूं। कहते हैं उनका यह रवैया तो मेरी कल्पनाओं में भी नहीं था। उस समय से मैं उनका क़ायल हो गया हूँ। इसी तरह एक सहायक कारकुन ने भी लिखा एक सामान्य कारकुन ने भी लिखा कि मुझे पहले डांटा उसके बाद माफी मांगी। इसी तरह एक और घटना किसी ने लिखी है कि मेरे से दफ्तर में कुछ अति हुई तो उन्होंने थोड़ी सी चेतावनी दी। मैं घर में बैठा हुआ इस्तिग़फ़ार कर रहा था तो इतने में दरवाजा खटका और जब मैं बाहर गया तो देखा कि मियां अहमद साहब खड़े थे। उन्होंने कहा कि आज मैंने तुम्हें कुछ कठोर शब्द कह दिए हैं इसके लिए क्षमा चाहता हूं और वापस मुड़कर कार में बैठे और वापस आ गए।

इसके बाद मुबश्शिर अयाज़ साहिब कहते हैं कि मैं खालिद पत्रिका का एडिटर था महमूद बंगाली साहिब मरहूम ऑस्ट्रेलिया से तशरीफ़ लाए हुए थे उनका इंटरव्यू था उन्होंने एक घटना का वर्णन किया जब मियां अहमद साहिब सदर थे तो उस समय तरबियती क्लास के दौरान नाज़िम आला तरबियती क्लास थे। जब क्लास खत्म हुई तो उन्होंने जब बिल प्रस्तुत किया तो कुछ आने बजट से अधिक खर्च हो गए थे। कुछ आने का मतलब है कि कुछ पैसे। सदर साहब की ओर से बिल रद्द हो गया। रद्द हो गया कि यह नहीं पास हो सकता। कहते हैं मैं खुद उनके पास गया कि यह कौन सी बड़ी बात है, कुछ आने अधिक हुए हैं और यह कोई ऐसी बड़ी रकम नहीं है अगर आप नहीं देते तो मैं अपनी जेब से खर्च कर लेता हूं तो उन्होंने कहा कि जेब से खर्च करने का मामला नहीं है, असल चीज यह है कि मैं आप लोगों को यह समझाना चाहता हूं कि जमाअती माल को खर्च करने में सतर्क रहना चाहिए और जो जमाअती नियम है, जो निज़ाम मौजूद है उसको फॉलो करना चाहिए। और अगर अधिक आवश्यकता थी तो पहले स्वीकृति लेते फिर खर्च करते। और कहते हैं कि बंगाली साहिब कहा करते थे कि यह उनकी पकड़ थी, फिर बाकी जीवन में मेरे बहुत काम आई। कहते हैं कि ख़िलाफ़त के साथ भी इनका बड़ा अच्छा सम्बंध था। एक बार एक इफता कमैटी में ज़कात के मामले में चर्चा हो रही थी, इफता ने एक रिपोर्ट तैयार की। मुझे याद है कि मैंने इसको रद्द कर दिया और मैंने कहा कि इसका पुन: अवलोकन करें। कई कमैटियाँ बनीं, हर बार उलमा की लम्बी लम्बी बहसें होती थीं और कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे। अन्तत: सदर साहब ने इनको कमैटी का सदर बना दिया, वहाँ भी उलमा बड़ी तैयारी करके आए थे कि जो मैंने बात की है उसके उलट करें। तो कुछ देर इन्होंने उनकी बात सुनी फिर मुबश्शिर अयाज़ साहब कहते हैं कि इन्होंने बड़े प्रतापी रंग में कहा कि जब खलीफ-ए-वक़्त ने फैसला कर दिया तो फिर हम यह सोच क्यूँ रहे हैं कि इसके विरुद्ध हो सकता है और सारी युक्तियों को रद्द कर दिया तथा यह नहीं देखा कि कौन बड़ा विद्वान है और कौन क्या कह रहा है।

कहते हैं- तारीख-ए-अहमदियत तथा जमाअत की घटनाओं और रिवायतों के तो एन्साईकलोपीडिया (विश्व ज्ञान कोष) थे। और कहते हैं कि आजकल मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी लिख रहा हूं कहीं मुझे परेशानी होती तो उनकी ओर सहायता के लिए जाता और उनका इस बारे में बहुत विश्वसनीय और पक्का और ठोस ज्ञान था। इसी तरह क़ादियान के विभिन्न स्थानों के बारे में बहुत ज्ञान था और अगर क़ादियान में कोई उनको कह देता कि हमें दिखाएं और वहां के ऐतिहासिक स्थानों का परिचय करवाएं तो बड़ी खुशी से परिचय करवाया करते थे। एक बार तो यह बीमार थे पांव में मोच आई हुई थी लेकिन फिर भी किसी को आभास नहीं होने दिया और ऐसे ही चलते फिरते रहे जब सीढ़ियां चढ़ने लगे तो, तब मुबशशिर अयाज़ साहिब कहते हैं, हमें आभास हुआ बल्कि उन्होंने खुद ही बताया कि मुझे यह तकलीफ है तब हम लज्जित हुए कि क्यों उनको यह कष्ट दिया।

इसी प्रकार और बहुत सारे मामले हैं जब भी जमाअती सेवा के लिए कहीं भेजा तो फिर उन्होंने यह नहीं देखा कि रास्ते में कष्ट क्या है। एक बार किसी जमाअती मामले में दो पक्षों में लड़ाई हो गई थी उनकी संधि के लिए उनको भेजा गया और रास्ता बड़ा खराब था, कार आगे जा नहीं सकती थी, ट्रैक्टर ट्राली पर मिर्ज़ा खुर्शीद अहमद साहिब भी और मियां गुलाम अहमद साहब दोनों बैठे और मुबल्लिगों को साथ बिठाया और चल पड़े। रास्ते में एक ऐसा मार्ग आया कि ट्राली का वहां से गुजरना भी खतरनाक था। वहां से फिर उतरे फिर पैदल चले और आप अंत में जब इस गांव उस जगह पर पहुंचे तो मस्जिद में बुलाकर फैसला दिया उन्होंने दुआएं भी कीं और लोगों को भी एहसास हुआ होगा कि जब इतनी दूर से और मुश्किल सफर करके आए हैं तो कई सालों की जो लड़ाई थी और उनका मामला था अल्लाह तआला के फजल से उनकी कुर्बानी और उनकी दुआओं की वजह से हल हो गया।

और बहुत सारे वाकियात हैं कुछ मिलते-जुलते कुछ नए, लेकिन अब समय नहीं है कि उनका वर्णन किया जाए हर एक ने लिखा है कि कारकुनों के साथ बहुत ही मोहब्बत से पेश आया करते थे उनकी छोटी-छोटी आवश्यकताओं का ख्याल रखते थे।

फिर वह लिखते हैं कि जब यह नायब नाज़िर तालीम तो यदि ख़लीफ-ए-वक़्त की ओर से कहीं किसी विद्यार्थी के अनुदान की अस्वीकृति आ जाती, कुछ विशेष परिस्थितयों के कारण, तो उस समय यह कहा करते कि अनुदान की मंज़ूरी

अथवा कोई अन्य शुभ समाचार जो ख़लीफ-ए-वक़्त की ओर दिया करो और यदि अप्रसन्नता अथवा अस्वीकृति है तो हमें अपनी ओर से देनी चाहिए।

ज़फर अहमद ज़फर साहिब मुबल्लिग हैं वे लिखते हैं कि (उन्होंने भी पांव में फैक्चर होने का वही वाकया फिर सुनाया है वह लिखते हैं कि) हम भी साथ थे पांव सूज गया लेकिन उन्होंने परवाह नहीं की। सलीम साहिब भी यह लिखते हैं कि जब आप हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस के प्राइवेट सेक्रेटरी थे तो जब अधिक डाक इकट्ठी हो जाती थी तो सारे स्टाफ को कहा करते थे कि अपनी-अपनी सारी डाक एक जगह इकट्ठी कर दो और फिर सब का विभाजन करो और विभाजन में स्वयं अपने ज़िम्मा भी लेते थे और कहते हैं हम क्लर्कों से अधिक डाक यह खुद प्राइवेट सेक्रेटरी के तौर पर अपने ज़िम्मा लिया करते थे और उत्तर देकर हमसे पहले काम खत्म कर लिया करते थे। खत लिखने में, ड्राफ्टिंग में भी उनको बड़ा अच्छा अनुभव था और लेखन की योग्यता भी उनकी बड़ी अच्छी थी। वकालत-ए-माल द्वितीय के एक कारकुन लिखते हैं कि तहरीके जदीद की हम तारीख लिख रहे थे "माली कुर्बानी एक परिचय" इस पर हम लिख रहे थे। कई गलतियां निकलीं और अंत में फाइनल ड्राफ्टिंग करके जो वकीलुल माल थे उन्होंने कहा कि यह फाइनल मियां अहमद को दे आओ ताकि वह पढ़ लें और देख लें कि कोई कमी तो नहीं रह गई। कहते हैं तो मैंने कहा चलो ठीक है मियां अहमद को दे देते हैं 150 से 200 पृष्ठ हैं, इतना काम था कि चार-पांच दिन तो हमें सुकून मिलेगा। लेकिन कहते हैं सुबह में दफ्तर आया तो वह लिफाफा पड़ा हुआ था और उसको सही भी किया हुआ था और निशान भी लगाए हुए थे और रातों-रात वह सारी पढ़कर उन्होंने सुबह उस तक पहुंचा दी। यह थी उनकी काम की एफिशिएंसी जो हर कारकुन के लिए एक आदर्श है।

सदर मजलिस कारपरदाज़ थे वहां भी बड़ी गहराई से जायज़ा लिया करते थे निरीक्षण किया करते थे फिर जब यह नाज़िर इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया थे तो समीउल्ला साहिब लिखते हैं एक दिन उन्होंने मुझे कहा कि जितने मुबल्लिगों के परिवार यहां रहते हैं उनकी सूची बनाओ। अत: जब मैंने उनकी सूची दी तो अपनी पत्नी के साथ हर परिवार के घर में गए और उनको कहा कि तुम्हारे पति मैदान-ए-अमल में हैं इसलिए तुम्हारी कोई परेशानी हो कोई आवश्यकता हो तो उनको परेशान नहीं करना, तुम मुझे आकर बताया करो।

फरीदुर रहमान साहब यहां तामील व तनफ़ीज़ के वकालत के कारकुन हैं, यह कहते हैं कि चौधरी मोहम्मद अली साहब की किताब की कंपोज़िंग मैंने की और फाइनल प्रिंट दिखाने के लिए चौधरी साहब ने मुझे उनके पास भेज दिया। मैंने उनको दिया और थोड़ी देर के लिए रुका तो उन्होंने पूछा कि कोई समस्या है मैंने बड़े डरते-डरते कहा मेरी मां का ऑपरेशन है। कहते हैं मैंने इतनी बात ही की थी तो उन्होंने कहा कि कितनी रकम चाहिए और अपनी तरफ से ख़ज़ाने की चेक बुक निकाली और मेज़ पर रखी तो मैंने कहा 7000 रुपए चाहिए, आवश्यकता है, मुझे दे दें और जब मेरा बिल आएगा तो उस में से काट लें। लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत अकाउंट में से मुझे चेक दिया और फरमाया कि दुआ भी करूंगा। तुम्हारी यह समस्या नहीं है कि बिल आए काटूँ या न काटूँ, तुम यह पैसे ले जाओ और अगर और भी आवश्यता हो तो मेरे पास आ जाना और डरना नहीं। इसी तरह हाफिज़ साहब ने भी लिखा है कि खिलाफत से उनका एक विशेष संबंध था जो हर अवसर पर प्रकट होता था और जब उनको नाज़िर आला बनाया गया है तो अंजुमन के इज्लास में नाज़िरों के सामने मजलिस में उन्होंने जो पहली बात की वह यह थी कि मुझे समर्थन के लिए कहने की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह आप सब खुद्दाम-ए-सिलसिला बहरहाल करेंगे क्योंकि ख़लीफतुल मसीह ने मुझे मुकर्रर किया है लेकिन मुझे आपकी दुआओं की बहुत आवश्यकता है क्योंकि कुछ हस्तियों के कदमों में जगह पाना बहुत कठिन होता है।

इसी प्रकार नज़ारत दीवान से जब ये बदले गए तथा नाज़िर आला बनाए गए तो इनके एक कारकुन लिखते हैं कि दफतर जाने से पहले हमें स्वयं दफतर मिलने के लिए आए और फिर कहा कि आपसे विदा लेने के लिए आया हूँ। ये शब्द सुनकर हमारा दिल बहुत भर आया तो हमने कहा कि मियाँ साहब, आप यहीं रह जाएँ अथवा हमें भी साथ ले जाएँ। जिस पर इन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि मैं तो स्वयं खलीफ-ए-वक़्त के आदेश पर जा रहा हूँ और फिर कुछ दिनों बाद ही अपने रब्ब के आदेशुनसार उसके पास चले गए। अल्लाह तआला उनके दरजात बुलंद फ़रमाए। और इनकी संतान को भी नेकियाँ करने तथा इनकी नेकियों पर स्थापित रहने तथा करने का सामर्थ्य प्रदान करे और सभी वाक्फीन-ए-ज़िन्दगी तथा ओहदेदारों को भी चाहिए कि जिस प्रकार इन्होंने प्रतिज्ञा पालन के साथ अपने वक़्फ़ को निभाया तथा अपने दायित्वों का निर्वाह किया, अल्लाह तआला शेष लोगों को भी निभाने का सामर्थ्य प्रदान करे। अल्लाह तआला जमाअत को भविष्य में भी नेक, निष्ठावान तथा प्रतिज्ञा पालन के साथ सेवा करने वाले कारकुनान प्रदान करता रहे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फरमाया- दूसरा जनाज़ा जो आज मैंने पढ़ाना है, वह है आदरणीया दीपानो फरोख हूद साहिबा का, जो 26 जनवरी को 47 वर्ष की आयु में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उनकी मृत्यु हाई ब्लड प्रेशर और आंतड़ियों के इन्फेक्शन के कारण हुई। आपरेशन हुआ लेकिन एक सप्ताह के अंदर उनकी मृत्यु हो गई। उन्होने काफी लंबी बीमारी देखि है क्योंकि 15 वर्ष की आयु मे उनके दोनों गुर्दों ने काम करना छोड़ दिया था लेकिन उसके बावजूद जब से वे अहमदी हुई हैं नमाज़ समय पर अदा करती थीं और तहज्जुद का भी ध्यान रखती थीं और कुर्आन-ए-करीम की तिलावत भी किया करती थीं, जबकि यह ईसाईयत से अहमदी हुई थीं। 2004 में इन्होंने इस्लाम स्वीकार किया था और तब से ही नमाज़ों में तिलावत में तहज्जुद में नियमित रहीं। उन्होने अहमदियात से पहले इस्लाम स्वीकार किया था बाद में फिर अहमदी हुईं। उन्हें इस बात का एहसास था कि मुसलमानों की हालत में इस समय कुछ खराबी है। अत: उन्होंने आंहज़रत सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की आखिरत के बारे में वर्णित भविष्यवाणियों के आधार पर वास्तविकता को तलाश करना आरंभ किया और इस वजह से फिर अहमदियात मे सम्मिलित हुईं। यह कहती हैं कि मैंने स्वयं को धीरे धीरे मौत की ओर जाते अनुभव कर रही थी यहाँ तक कि जब इन्होंने इस्लाम कबूल किया तो विभिन्न रोगों के कारण लगभग मृत्यु के निकट थीं, इनके डाक्टर जो गैर मुस्लिम थे, कहते थे कि जब से ये अल्लाह से मिली हैं इनका दिल नई सांसें ले रहा है। इस्लाम अहमदियत कबूल करने से पहले इन्हें हैपिटाईटिस (सी) भी हो गया था परन्तु बैअत करने के बाद इन्हें अल्लाह तआला ने चमत्कारी रूप से स्वस्थ कर दिया था। इस अपने चमत्कारी स्वास्थ्य का अपने परिवार से कई बार वर्णन करती थीं और दो बार ये मुझसे मिल चुकी हैं तथा बड़ा आज्ञा पालन और निष्ठा की अभिव्यक्ति इन्होंने की। अमीर साहिब कहते हैं कि मैं उनसे कुछ दिन पहले मिलने गया तो खाना तैयार किया हुआ था जब मैंने उनसे कहा कि इस कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता थी तो उन्होंने कहा कि आप पहली बार मेरे घर आए हैं और खलीफ़-ए-वक़्त के प्रतिनिधि की हैसियत से आए हैं। हर समय उनके घर मे MTA लगा रहता था।

अल्लाह तआला इनके दर्जे बुलन्द करे, क्षमा करे और रहमत का सलूक फरमाए तथा इनकी जो इच्छा थी कि इनका परिवार भी अहमदी मुसलमान हो जाए, अल्लाह तआला इनकी इस इच्छा को पूरा फरमाए।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

वक़्फ़ को निभाएँ। केवल यह न हो कि वक़्फ़ का टाइटल लग गया तो इसी पर प्रसन्न हो जाएँ। उन को चाहिए कि अपने आप को पूर्णता धर्म की सेवा के लिए प्रस्तुत करें। अल्लाह ताला सामर्थ्य प्रदान करे।

(खुत्बा निकाह 4 अक्टूबर 2014 अलफज़ल इंटरनेशनल 25 नवंबर 2016)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने फरमाया:-

अधिक से अधिक क़नाअत (कम में गुज़ारा करने की आदत) पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए क़नाअत एक ऐसी चीज़ है जो कि घरों में पैदा हो जाए तो बहुत सारी समस्याएं घरों की सुलझ जाती हैं। औरतों को भी विशेष रूप से इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने पति की जितनी आमदनी है उसके अनुसार अपने पांव फैलाएं, चादर को हमेशा देखें न कि अनावश्यक मांगें हों।

(खुत्बा निकाह 10 अगस्त 2015 अलफज़ल इंटरनेशनल 14 जुलाई 2017)

जमाअत के मुबल्लिग़ों के साथ जहां भी रहना हो जैसे भी हालात हों किसी प्रकार का ऐतराज़ तो अलग रहा माथे पर बल भी नहीं आना चाहिए

मुबल्लिग़ों या वाक़िफ़े-ए-ज़िंदगी से ब्याही जाने वाली वाकिफ़ात-ए-नौ को उपदेश करते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया:-

यह सोच वाक़िफ़े-ए-ज़िंदगी से मुबल्लिग़ों से शादी और निकाह करने वालों की होनी चाहिए कि यह न समझें कि उनकी बेटी की सारी इच्छाएं पूरी की जाएंगी, सीमित साधनों में और विभिन्न स्थानों पर रहते हुए जहां भी मुबल्लिग़ या वाकिफ-ए-ज़िंदगी तैनात होता है, उसको उसके साथ उन कठिनाइयों से भी गुज़रना पड़ेगा।

(खुत्बा निकाह 16 जून 2014 अलफज़ल इंटरनेशनल 21 अक्टूबर 2016)

जिस लड़की ने मुबल्लिग़-ए-सिलसिला से शादी करने की हामी भरी हो उसकी भी यह ज़िम्मेदारी है और विशेष रूप से वाकिफ़ा नौ है तो फिर और भी ज़िम्मेदारी बढ़ जाती है कि जहां भी मैदान ए अमल में मुबल्लिग़ को भेजा जाए, जो काम भी उसके सुपुर्द किए जाएं, जैसे हालात में भी रखा जाए, उसने रहना है और किसी प्रकार का ऐतराज़ तो अलग रहा माथे पर बल भी नहीं आना चाहिए।

(खुत्बा निकाह 10 मई 2014 अलफज़ल इंटरनेशनल 7 अक्टूबर 2016)

वाकिफ़ात-ए-नौ के इज्तेमा के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ के उपदेश:-

आप में से बड़ी तो कुछ शादीशुदा हैं, बच्चों वाली भी हैं, ऐसा नमूना दिखाएं कि न केवल इस ज़माने के लोग ही बल्कि आइंदा आने वाले भी आपके लिए दुआएं मांगें। आपका समस्त जीवन, आपके शब्द, आप के हालात ओर व्यवहार इस चीज़ को प्रकट करने वाले होने चाहिएं कि आप ने अल्लाह ताला को हर वस्तु पर प्राथमिकता दी और आपको किसी पुरस्कार की इच्छा नहीं। धर्म की सेवा का जोश केवल अल्लाह ताला के लिए है। फिर आप वास्तविक वाकिफ़ात-ए-नौ बन जाएंगीं। केवल नाम की नहीं बल्कि वास्तव में और आपने अपना वादा पूरा कर दिया होगा।

(1 मई 2011 में वाकिफ़ात-ए-नौ के इज्तेमा के अवसर पर हुज़ूर अनवर का भाषण)

आपके शादी-शुदा जीवन में सच्चाई का इज़हार अत्यंत आवश्यक है। निस्संदेह शादी के बाद अपने पति और ससुराल के साथ संबंध में, सच्चाई में, मामूली सी कमी भी नहीं आनी चाहिए।

(खिताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़, वाकिफ़ात-ए-नौ के इज्तेमा के अवसर पर,5 मई 2012 ई, मरियम 1 अप्रैल जून 2013 ई)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष-

को बताया गया कि वे हर साल जलसा UK में सम्मिलित हुई हैं और आप से मिलने का भी कोई अवसर जाने नहीं देतीं। लेकिन 2 साल से काफी बीमार हैं, इसलिए जलसा आदि में सम्मिलित नहीं हो सकीं और अब आप से दुआ की दरखास्त करना चाहती हैं। जिस पर हुज़ूर ने फरमाया कि "मैं उनको जानता हूं"। मेरी माता के लिए यह बड़ा बा बरकत और खुशी का अवसर था और हुज़ूर अनवर का यहां अत्यंत संक्षिप्त निवास उनके लिए इस दृष्टिकोण से भी बाबरकत था कि उनको इस प्रकार हुज़ूर अनवर से मिलने और दुआ का निवेदन करने का अवसर मिल गया।

जिब्राइल तोरे साहिब जिनका संबंध एवरी कोस्ट से है वे कहते हैं हुज़ूर का दीदार करने से हमें बहुत प्रसन्नता हुई, हुज़ूर के पीछे नमाज़ें भी अदा कीं जिससे हमारे अंदर एक रुहानी जोश पैदा हुआ। अल्लाह के फज़ल से यही अवसर हैं जिनसे हमें बहुत लाभ उठाना चाहिए। हुज़ूर को देखकर दिल में एक संतुष्टि सी होती है। इसलिए हुज़ूर के पीछे नमाज़ अदा करना अत्यंत लाभकारी और रूहानियत को उभारने वाला अवसर होता है।

मूसा हसन साहब जिनका संबंध घाना से है उन्होंने बयान किया समस्त प्रशंसाएँ अल्लाह के लिए हैं कि हमें हुज़ूर के आगमन पर बहुत प्रसन्नता हुई और हम अपने समस्त कारोबार छोड़कर हुज़ूर अनवर के दीदार के लिए यहां आज एकत्र हुए हैं। हुज़ूर अनवर की मौजूदगी से हम अहमदी अपने प्यारे ख़लीफा से बरकतें प्राप्त कर रहे हैं। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं अपनी प्रसन्नता का प्रकटन कर सकूं। उस्मान माती साहिब जिनका संबंध नाइजर से है वह कहते हैं मैं अल्लाह ताला का बहुत धन्यवाद करता हूं। हुज़ूर अनवर का आगमन हम सबके लिए बहुत बड़ी नेमत थी। हमें हुज़ूर के पीछे नमाज़ ज़ोहर और असर पढ़ने का अवसर मिला। हमें अल्लाह ताला से दुआ करते रहना चाहिए कि वह हमें हमेशा सीधे मार्ग पर चलाता चला जाए और अपने ईमान के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण दुआ है। नमाज़ ही हमारा सब कुछ है और इसी से हम अपने स्रष्टा की पनाह में आ सकते हैं और उसके फज़लों की वर्षा प्राप्त करने वाले बन सकते हैं। अल्लाह ताला हमें अपने फ़ज़लों का वारिस बनाता चला जाए।

मुकर्रम हाफ़िज़ एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग इंचार्ज बेल्जियम वर्णन करते हैं- अल्लाह ताला के फज़ल से नए बात करने वाले अब जमात का active अंग बन गए हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दौरा की तैयारी के लिए उन्होंने भी बढ़-चढ़कर वक़ार अमल में हिस्सा लिया। जब हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के काफिला को फ्रांस की बंदरगाह Calais रवाना करने के बाद लगभग 8:00 बजे के करीब वापस मिशन हाउस पहुंचे तो देखा कि तमाम खुद्दाम वकार अमल खत्म कर चुके थे और 4 नए बैत करने वाले मिशन हाउस में ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। कहने लगे कि हम आपकी इसलिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि आप वापस आएं और हमें हुज़ूर अनवर का तबर्रुक दें। उनमें से एक नई बैत करने वाले ने तो जिस पानी की बोतल से हुज़ूर अनवर ने पानी पिया था उसे भी ले लिया और कहा कि मैं इसे भी बरकत के लिए अपने पास संभाल कर रखूंगा। इस प्रकार हुज़ूर अनवर का यह अत्यंत बरकतों से भरा हुआ दौरा अल्लाह ताला के असीमित फज़लों और बरकतों को समेटते हुए महान कामयाबियों और सफलताओं के साथ सही सलामत अपने अंत को पहुंचा। अल हमदुलिल्ला अला ज़ालिक।

.....समाप्त

☆ ☆ ☆

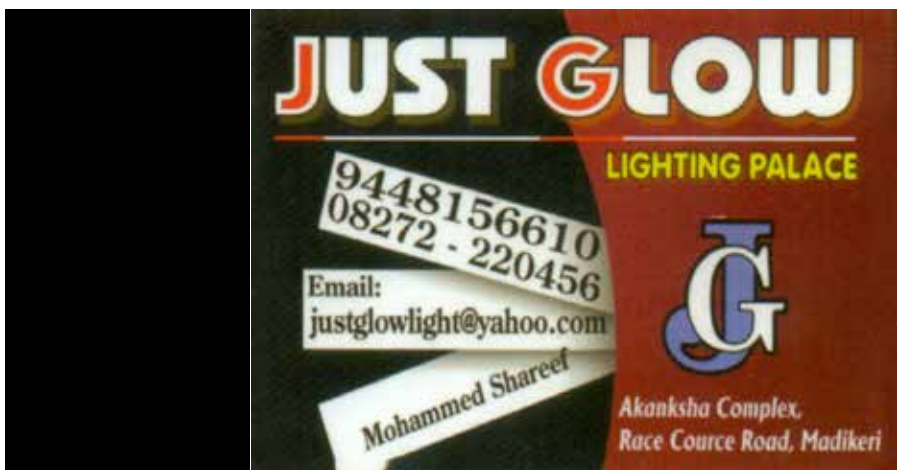

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (अन्तिम भाग -12)

☆ महोदया ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि मेरा जलसा सालाना का बहुत अच्छा अनुभव रहा है। जलसा पर तो हर ओर अमन, मोहब्बत का ही पैगाम था। जब वापस जाऊंगी तो लोगों को बताऊंगी कि किस प्रकार 40,000 लोग एक स्थान पर बिना किसी कठिनाई के मोहब्बत और अमन के साथ उपस्थित थे। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं था। समस्त अंदर आने वाले और बाहर जाने वाले रास्तों पर लोग बड़े सुकून के साथ गुज़र रहे थे। कोई धक्का-मुक्की नहीं थी

☆ जमाअत के लोग पुरुषों एवं महिलाओं की एक बड़ी संख्या ने अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा. मस्जिद फज़ल लंदन के बाहरी हिस्से को सुंदर झंडियों से सजाया गया था, हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक अपना हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलामु अलैकुम कहा

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: फरहत अहमद आचार्य)

इटली

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर तशरीफ़ ले आए, जहां इटली देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

एक पीएचडी डॉक्टर महिला भी इस प्रतिनिधिमंडल में सम्मिलित थीं। महोदया का संबंध ईसाईयत से है। हुज़ूर अनवर ने महोदया को संबोधित करते हुए फरमाया कि आप तो एक मुसलमान की तरह लग रही हैं। आप स्वयं कुछ नहीं कर रहीं, जो भी होता है अल्लाह की मर्जी के अधीन होता है। महोदया ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि मेरा जलसा सालाना का बहुत अच्छा अनुभव रहा है। जलसा पर तो हर ओर अमन, मोहब्बत का ही पैगाम था। जब वापस जाऊंगी तो लोगों को बताऊंगी कि किस प्रकार 40,000 लोग एक स्थान पर बिना किसी कठिनाई के मोहब्बत और अमन के साथ उपस्थित थे। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं था। समस्त अंदर आने वाले और बाहर जाने वाले रास्तों पर लोग बड़े सुकून के साथ गुज़र रहे थे। कोई धक्का-मुक्की नहीं थी। महोदया ने बताया कि मैं औरतों की तरफ भी गई थी वहां भी औरतें और बच्चे आजादी के साथ अपने प्रोग्राम कर रहे थे।

एक महिला जो अपने पति के साथ आई थीं, उन्होंने बताया कि मैंने पिछले साल बैत की थी, मैंने पहले बैत की थी बाद में मेरी शादी हुई थी। हुज़ूर अनवर ने महोदया को फरमाया अपना धार्मिक ज्ञान बढ़ाएं। महोदया ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अपने माता-पिता के लिए दुआ की दरखास्त की। अल्लाह तआला उनको अहमदियत स्वीकार करने का सामर्थ्य प्रदान करे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया अल्लाह तआला उनको हिदायत दे।

इसके बाद प्रतिनिधिमंडल के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ फोटो खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इटली के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ यह मुलाकात 7:35 तक जारी रही।

बोकिना फासो

इसके बाद बोकिना फासो देश से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया बुर्किना फासो से वहां के अमीर जमाअत के अतिरिक्त नेशनल सेक्रेटरी तालीम जो वहां के हाई स्कूल के प्रिंसिपल भी हैं और एक स्थानीय मुअल्लिम आए थे। मुअल्लिम साहिब ने बताया कि उन्होंने 1994 से 1997 तक जामिया तुल मुबश्शिरीन घाना से शिक्षा प्राप्त की है। हुज़ूर अनवर ने नेशनल सेक्रेटरी शिक्षा से पूछा कि आपको यहां का जलसा कैसा लगा। जिस पर महोदय ने बताया कि यहां से हमने बहुत कुछ सीखा है जलसा के प्रबंध बहुत अच्छे थे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया माशाअल्लाह बोकिना फासो की जमाअत मुखलिस है निज़ाम को बहुत उत्तम रंग में फॉलो कर रही है। अफ्रीका की बहुत सी जमाअतों से आगे है, ख़ुदा तआला उनको इखलास बढ़ाता चला जाए। सेक्रेटरी तालीम और प्रिंसिपल हाईस्कूल ने निवेदन किया कि बोकिना फासो में जमाअत के हाईस्कूल नहीं हैं केवल एक ही हाईस्कूल है। अब और अधिक स्कूल की आवश्यकता अनुभव हो रही है। सरकारी हाई स्कूल का मियार अच्छा नहीं है। हुज़ूर ने फरमाया मैंने पहले ही हिदायत दी है कि प्राइमरी स्कूल खोलते चले जाएं। इस समय आपके पास 5 प्राइमरी स्कूल हैं। अब प्रोग्राम बनाएं और हर साल 3-4 प्राइमरी स्कूल खोलें, पहले प्राइमरी स्कूल बनाएं। हुज़ूर ने फरमाया हाई स्कूल का प्लान करें और प्रोग्राम बनाकर भेजें। पहले Feasibility रिपोर्ट तैयार करके भिजवाएं विचार करें कि किस स्थान पर बनाना है। फ़रमाया कि स्कूल भी विभिन्न Phase में बनते हैं आवश्यकता अनुसार साल दो साल बाद एक दो कमरों की बढ़ोतरी कर ली जाती है। इस प्रकार अपने वसाइल के अन्दर रहते हुए स्कूल की इमारत पूर्ण हो जाती है अफ्रीका में इसी प्रकार बनाते हैं साथ साथ बढ़ोतरी करते जाते हैं। हुज़ूर ने फरमाया एक प्राइमरी स्कूल का चयन करके तीन कमरे उसी में बना लें तो प्राइमरी के साथ हाई स्कूल भी प्रारंभ कर सकते हैं। इस प्रकार पहले एक स्कूल को प्राइमरी से हाई तक ले जाएँ। और अन्य दो स्थानों पर प्राइमरी स्कूल खोल लें। हाई स्कूल खोलने के लिए यह आवश्यक है कि पहले देखें कि क्वालिफाइड अध्यापक मिल जाते हैं। इसके बाद स्कूल खोलने की आगे कारवाई होगी। बोकिना फासो के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर के साथ यह मुलाकात 7:50 तक जारी रही।

फैमिली मुलाकातें

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार फैमिली मुलाकातें शुरू हुई। 5 फैमिलीज़ के 20 लोगों ने और दो लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर अपने प्यारे आका से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाकात करने वालों में जर्मनी की जमाअतों Russelsheim, Mannheim और Watzler के अतिरिक्त बाहरी देशों के घाना, टोगो और आज़र बाईजान से आने वाले लोगों ने भी मुलाकात की मुलाकातों का यह प्रोग्राम 8:30 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

आमीन की तक़रीब

9:00 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के पुरुष हॉल में तशरीफ़ लाए और प्रोग्राम के अनुसार अमीन की तकरीब का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर ने निम्नलिखित 25 बच्चों और बच्चियों से कुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ कराई। अजीज़म मुबारक महमूद, सरबाज़ अली चौधरी, सबूर अहमद गोरी, तहसीन महमूद, नफीस अहमद, ओवैस अहमद, इब्तेसाम अहमद, बेसिल अहमद, कामरान हमीद, आकिफ अहमद, नजीब अहमद, ऐमन खान , बास्मा सिद्दीक, मुनाहिल महमूद, आफिय कारन अहमद, फैज़ा अहमद, फरीहा नदीम आफरीन बशीर, मलीहा महमूद, अमारा अहमद, ज़ारा नासिर, तह्रीम बाजवा, अमर्ज़श अजहर, सबाहा ज़फर, ऐशा अहमद।

आमीन की तकरीब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ने नमाज़ मगरिब और ईशा पढ़ाईनमाज़ों के बाद मुकर्रम हैदर अली ज़फर

साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ की आगया से 14 निकाहों का ऐलान किया। हुज़ूर अनवर इस बीच वही पर रहे। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

29 अगस्त 2017 (मंगलवार)

जर्मनी से रवानगी और लन्दन में आगमन

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5:30 बजे तशरीफ ला कर बैतुल सबूह में नमाज़ फजर पढ़ाई। नमाज़ की समाप्ति के बाद हुज़ूर अनवर अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए। आज प्रोग्राम के अनुसार फ्रैंकफर्ट जर्मनी से लंदन के लिए जाना था। फ्रैंकफर्ट रीजन और आसपास की जमाअतों से पुरुष एवं महिलाएं और बच्चे बूढ़े बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही बैतुल सबूह में एकत्र होने शुरू हो गए थे। हुज़ूर अनवर सुबह 10:00 बजे अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए। छोटे बच्चे और बच्चियां ग्रुपों की शक्ल में अलविदा नज्में पढ़ रहे थे, जमाअत के लोग लाइन में खड़े हुए थे। हुज़ूर अनवर प्रेम पूर्वक जमाअत के लोगों के मध्य लगभग 10 मिनट तक खड़े रहे। हर छोट-बड़े ने प्यारे आका का दीदार किया। 10:10 पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई और सबको अस्सलामु अलैकुम कहा। इसके बाद काफिला सफर पर रवाना हुआ। दोनों तरफ खड़े हुए महिलाओं और पुरुषों ने निरंतर अपने हाथ ऊपर करते हुए अपने प्यारे और महबूब इमाम को अलविदा कहा। बहुतों की आंखों से आंसू रवा थे। जुदाई के यह क्षण प्यार करने वालों के लिए बहुत कठिन थे।

Frankfurt (Germany) से लंदन जाते हुए मार्ग में बेल्जियम के मिशन हाउस बैतुस्सलाम ब्रसेल्स में रुकने का प्रोग्राम था। फ्रैंकफर्ट से ब्रसेल्स तक का दूरी लगभग 400 किलोमीटर है। फ्रैंकफर्ट से ब्रसेल्स जाते हुए जर्मनी के शहर आफरीन से आगे बेल्जियम देश की सीमाएं शुरू हो जाती हैं। यहां बॉर्डर पर जमाअत बेल्जियम से मुकर्रम अमीर साहिब बेल्जियम डॉ इदरीस अहमद साहिब, मुकर्रम असद मुजीब साहिब, मुबल्लिग़ सिलसिला व जनरल सेक्रेटरी मुकर्रम तौसीफ अहमद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला व सदर खुद्दामुल अहमदिया मुकर्रम अफज़ाल अहमद साहिब, नेशनल सेक्रेटरी वसाया और मुकर्रम बशीर हाशमी साहिब इंचार्ज मस्जिद कमेटी पर आधारित प्रतिनिधिमंडल हुज़ूर अनवर के स्वागत के लिए मौजूद थे। यहां बिना रुके ही सफ़र जारी रहा और आगे जाकर बेल्जियम से आने वाली गाड़ी ने काफिला को लीड किया।

बैतुस्सलाम (ब्रसेल्स) में हुज़ूर अनवर का आगमन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ 2:10 पर अहमदिया मिशन हाउस बैतुस्सलाम ब्रसेल्स पहुंचे। स्थानीय जमाअत के लोगों, पुरुषों एवं स्त्रियों और नेशनल आमिला के मेंबरों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े जोश के साथ स्वागत किया। स्वागत करने वालों की संख्या लगभग 750 थी। यह लोग पुरुष एवं महिलाएं बेल्जियम की 13 जमाअतों से आए हुए थे और सुबह से ही मिशन हाउस में पहुंचना शुरू हो गए थे। इनमें अरब के नए बैत करने वाले भी सम्मिलित थे, हर कोई प्यारे आका का दीदार करके खुशी एवं प्रसन्नता से भर गया था। मुकर्रम डॉक्टर इदरीस अहमद साहिब अमीर जमाअत बेल्जियम और मुकर्रम हाफिज एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम ने हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। अज़ीज़म तंज़ील अहमद ने हुज़ूर अनवर की सेवा में फूल पेश किए, जबकि अज़ीज़ा अदीला शरीफ में हज़रत बेगम साहिबा की सेवा में फूल पेश किए। इसके बाद हुज़ूर अनवर मिशन हाउस के रिहाइश वाले हिस्से में तशरीफ ले गए।

नमाज़ों की अदायगी के लिए मिशन हाउस के बाहरी हिस्से में मार्की लगाई गई थी। हुज़ूर अनवर ने 2:30 पर मार्की में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ोहर और असर जमा करके पढ़ाई, नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब से विभिन्न जमाअतों से आने वाले लोगों और नई बैत करने वालों के बारे में पूछा कि बैत करने वाले कितने हैं, उनमें मर्द कितने हैं और महिलाएं कितनी हैं, इस पर इंचार्ज साहिब ने बताया कि नई बैत करने वालों में से 20 पुरुष और 15 महिलाएं हैं। हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक लोगों के खाने के प्रबंध के बारे में पूछा जिस पर मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब ने बताया के समस्त लोगों के लिए खाने का भी प्रबंध किया गया है। इसके बाद हुज़ूर अनवर रिहायशी हिस्से में तशरीफ ले गए और 3:25 पर अपने निवास स्थान से बाहर आए और लजना के हॉल में तशरीफ ले गए जहां महिलाओं ने हुज़ूर का दीदार किया और हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक बच्चियों को चॉकलेट प्रदान कीं। जब हुज़ूर अनवर लजना के हॉल से बाहर तशरीफ़ लाए तो बच्चे एक लाइन में खड़े थे हुज़ूर अनवर ने प्रेमपूर्वक बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान कीं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने जामिया अहमदिया UK में शिक्षा ग्रहण करने वाले बेल्जियम के विद्यार्थी अज़ीज़म सफीर अहमद साहिब से उनकी छुट्टियों के बारे में प्रश्न किया। हुज़ूर अनवर ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब और मुकर्रम असद मुजीब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला और जनरल सेक्रेटरी बेल्जियम जमाअत को संबोधित करते हुए कहा कि आज तो बहुत गर्मी है, अफ्रीका याद आ गया, आज अफ्रीका की यादें ताजा हुई हैं। बेल्जियम में उस दिन बहुत गर्मी थी, इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मुकर्रम असद मुजीब साहिब जनरल सेक्रेटरी से पूछा कि मार्की कब लगी थी, फिर हुज़ूर अनवर ने सिक्योरिटी के प्रबंधों के बारे में उपदेश दिया कि सिक्योरिटी के प्रबंध अच्छे होने चाहिए। इसके बाद मुकर्रम अमीर जमाअत अहमदिया जर्मनी मुकर्रम अब्दुल्ला वागेस हाउस साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी मुकर्रम हैदर अली ज़फर साहिब, जनरल सेक्रेटरी इलियास अहमद मजोका साहिब, नायब जनरल सेक्रेटरी मुकर्रम जरियु अल्लाह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला, मुकर्रम डॉ अतहर ज़ुबैर साहिब, मुकर्रम अब्दुल्लाह सिप्रा साहिब और मुकर्रम सदर साहिब खुद्दामुल अहमदिया ने अपने खुद्दाम की सिक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। जर्मनी से यह लोग हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए काफिला के साथ आए थे। इसी प्रकार बेल्जियम के मुबल्लिग़ मुकर्रम मोहम्मद मज़हर साहिब, मुकर्रम अरसलान अहमद साहिब, मुकर्रम हसीब अहमद साहिब, मुकर्रम तौसीफ अहमद साहिब, मुकर्रम असद मुजीब साहिब, मुकर्रम हाफिज एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम ने भी हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार 3:40 पर यहां से फ्रांस की बंदरगाह Calais की ओर रवानगी हुई और 5:30 पर चैनल टनल पहुंचे। जर्मनी से साथ आने वाले लोग और खुद्दाम की सिक्योरिटी टीम हुज़ूर अनवर को चैनल टनल तक छोड़ने और अलविदा करने के लिए काफिला के साथ ही रही। इसी प्रकार बेल्जियम से मुकर्रम अमीर साहिब बेल्जियम, मुकर्रम हाफिज़ एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज बेल्जियम, मुकर्रम अनवर हुसैन साहिब नायब अमीर, मुकर्रम असद नजीब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला व जनरल सेक्रेटरी, मुकर्रम अफज़ाल अहमद साहिब नेशनल सेक्रेटरी वसाया, और सदर मजलिस खुद्दामुल अहमदिया मुकर्रम तौसीफ अहमद साहिब हुज़ूर अनवर को यहां से लंदन के लिए रुखसत करने के लिए काफ़िला के साथ आए।

फिर पासपोर्ट इमीग्रेशन और अन्य डाक्यूमेंट्स की क्लीयरेंस के बाद 6:40 पर काफिला की गाड़ियां ट्रेन में बोर्ड हुईं और यह ट्रेन 6:50 पर Calais से बर्तानिया के समुद्र किनारे स्थित शहर डोवर की ओर रवाना हुए, लगभग आधे घंटे के सफर के बाद ट्रेन चैनल टनल पार करके डोवर के निकट बर्तानिया के क्षेत्र में प्रवेश हुई और अपने स्टेशन पर रुकी। लगभग 10 मिनट के अंतराल के बाद फ्रांस के समय के अनुसार 7:30 पर और बर्तानिया समय के अनुसार 6:30 पर काफिला की गाड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटर मार्ग पर यात्रा आरंभ हुई। (बर्तानिया के समय फ्रांस के समय से 1 घंटे पीछे है)।

मुकर्रम मंसूर अहमद शाह साहिब नायब अमीर जमाअत यू के, मुकर्रम अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज UK, मुकर्रम साहिबज़ादा मिर्ज़ा वकास अहमद साहिब सदर मजलिस खुद्दामुल अहमदिया UK, मुकर्रम मिर्ज़ा नासिर इनाम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया UK, मुकर्रम मुबारक अहमद ज़फर साहिब एडिशनल वकीलुल माल लंदन, मुकर्रम अख़लाक़ अहमद अंजुम साहिब दफ्तर वकालत तबशीर लंदन, मुकर्रम मेजर महमूद अहमद सहिब आफिसर विशेष सुरक्षा, अपनी सिक्युरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का स्वागत करने के लिए मौजूद थे।

मस्जिद फ़ज़ल लंदन में शुभ आगमन

लगभग डेढ़ घंटे के यात्रा के बाद शाम 8:00 बजे मस्जिद फज़ल लंदन में शुभ आगमन हुआ, जहां जमाअत के लोग पुरुषों एवं महिलाओं की एक बड़ी संख्या ने अपने प्यारे आक़ा को स्वागतम कहा। मस्जिद फज़ल लंदन के बाहरी हिस्से को सुंदर झंडियों से सजाया गया था, हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक अपना

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 15 March 2018 Issue No. 11

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हाथ ऊंचा करके सबको अस्सलामु अलैकुम कहा और अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनश्रिहिल अज़ीज़ के साथ जिन भाग्यशाली लोगों को इस यात्रा पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनके नाम रिकॉर्ड के लिए दर्ज हैं-

मुकर्रम मुनीर अहमद जावेद साहिब,(प्राइवेट सेक्रेटरी) मुकर्रम आबिद वहीद खान साहिब (इंचार्ज प्रेस एंड मीडिया ऑफिस लंदन), मुकर्रम सैयद मोहम्मद अहमद नासिर साहिब (नायब अफसर विशेष सुरक्षा विभाग लंदन), मुकर्रम नासिर अहमद सईद साहिब (सुरक्षा विभाग), मुकर्रम सखावत अली बाजवा साहिब, (सुरक्षा विभाग) मुकर्रम हुसैन आवान साहिब (सुरक्षा विभाग), मुकर्रम ख्वाजा कुद्दूस साहिब (सुरक्षा विभाग), मुकर्रम महमूद अहमद खान साहिब (सुरक्षा विभाग), मुकर्रम हिमाद मुबीन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला (दफ्तर प्राइवेट सेक्रेटरी) खाकसार अब्दुल माजिद ताहिर (एडिशनल वकील तबशीर लंदन)।

जामिया अहमदिया केनेडा के 2 विद्यार्थी मुकर्रम अर्सलान वड़ाइच साहिब और अजीजम फ़र्ख ताहिर अहमद और जामिया हमीदिया UK के विद्यार्थी अज़ीज़ मशहूद अहमद खान साहिब जो इन दिनों वक़्फे आरज़ी पर यहां दफ्तर प्राइवेट सेक्रेटरी में सेवा कर रहे थे, उनको भी काफिला में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त मुकर्रम नदीम अहमद अमीनी साहिब, मुकर्रम नासिर अहमद अमीनी साहिब, मुकर्रम डॉक्टर जदरान साहिब, मुकर्रम अब्दुल रहमान साहिब को काफिला की गाड़ियों की ड्राइविंग करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

MTA इंटरनेशनल UK के निम्नलिखित मेम्बरों ने दौरे के ख़ुत्बा जुमा, मस्जिद का उद्घाटन और प्रतिनिधिमंडलों के साथ मीटिंग और हुज़ूर अनवर के इंटरव्यू और अन्य समस्त प्रोग्रामों की रिकॉर्डिंग और जलसा सालाना के प्रोग्रामों की लाइव ट्रांसमिशन के लिए इस दौरे में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुकर्रम मुनीर अहमद ओदा साहिब, मुकर्रम सफीरुद्दीन कमर साहिब, मुकर्रम अदनान ज़ाहिद साहिब, मुकर्रम सुलेमान अब्बासी साहिब।

MTA की टीम के अतिरिक्त मुकर्रम उमेर अलीम साहिब इंचार्ज मखज़ने तसावीर विभाग ने भी इस में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त किया। जर्मनी से डॉक्टर अतहर जुबेर साहिब इस यात्रा के दौरान डॉक्टर के तौर पर काफिले के साथ रहे। इन लोगों के अलावा जर्मनी से मुकर्रम अब्दुल्ला सिप्रा साहिब को भी इस यात्रा में काफिला के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अल्लाह ताला इन समस्त लोगों के लिए यह सौभाग्य मुबारक करे। आमीन

हुज़ूर अनवर का बेल्जियम में ठहरना 2 घंटे से भी कम समय पर आधारित था। हुज़ूर अनवर के इस कम समय के प्रोग्राम में भी यहां की जमाअत के लोगों को और विशेषकर अरब के नए बैत करने वालों के दिलों पर गहरा प्रभाव डाला और उनके जीवन में एक विशेष रूहानी परिवर्तन पैदा हुआ। उनकी अपने प्यारे आका के दीदार की प्यास बुझी और यह लोग खूब संतुष्ट हुए और अल्लाह के फ़ज़लों के वारिस बने। उनमें से कुछ नए बैत करने वालों के विचार निम्नलिखित हैं:-

★मोहम्मद अल-गज़रवी साहिब जिनका संबंध मराकश से है वह अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं- हुज़ूर अनवर को देखकर और मिलकर बहुत सी बरकतें समेटने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर का यह दौरा हमारी रूहानियत में उन्नति का कारण बना। यहां बेल्जियम में बहुत से अरब अहमदी हैं लेकिन अपने काम की मजबूरी के कारण से हुज़ूर अनवर को ज्यादा मिलने का मौका नहीं मिलता लेकिन हुज़ूर के इस बाबरकत दौरे के कारण सब अरब अहमदी बावजूद काम की मजबूरी के दूर-दूर से आकर आज एक जगह इकट्ठे हो गए हैं। और हुज़ूर का यह बाबरकत दौरा हमारे लिए किसी रूहानी डिनर से कम नहीं था। महोदय ने कहा कि मैं बयान नहीं कर सकता कि हुज़ूर का यहां आगमन हमारे लिए कितना बाबरकत है। हमारी दुआ है कि अल्लाह करे कि हुज़ूर अनवर के इसी तरह बेल्जियम की भूमि पर अधिक से अधिक कदम पड़ते रहें ताकि हम अधिक से अधिक बरकतें समेटने वाले हो सकें।

★इसके बाद बशीर बिन खैला साहिब जिनका संबंध अल्जीरिया से है उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा मैं इस साल बड़ा सौभाग्यशाली रहा हूं कि हुज़ूर अनवर से दो बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। एक बार जर्मनी जलसा पर और दूसरी बार यहां हुज़ूर अनवर के बेल्जियम में दौरे के दौरान, जहां हुज़ूर अनवर को देखने और आपके पीछे नमाज़ जोहर और असर अदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर के आगमन से एक भाईचारे और मोहब्बत का वातावरण था। विभिन्न कौमों के लोगों से भी मिलने का अवसर मिला। अल्लाह करे कि हुज़ूर इसी तरह बेल्जियम बार-बार तशरीफ़ लाते रहें ताकि हम बरकतें समेटते रहें।

★एक महिला आयशा मुजफ्फर साहिबा ने बयान किया पहले तो मैं बहुत परेशान थी कि मैं जर्मनी के जलसा में सम्मिलित नहीं हो सकी और हुज़ूर अनवर का दीदार भी नहीं कर सकी लेकिन जैसे ही मुझे ज्ञात हुआ कि हुज़ूर अनवर जर्मनी से लंदन वापस जाते हुये बेल्जियम में भी तशरीफ़ लाएंगे तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। इसी प्रकार मुझे हुज़ूर अनवर को देखने का अवसर मिल गया। सबसे खुशी वाली बात मेरे लिए यह थी कि जब प्यारे आका नीचे लजना के हॉल में तशरीफ़ लाए तो मैं हुज़ूर को देखकर अपने आंसू रोक नहीं पाई।

★तौफीक़ जामूई साहिब जिनका मराकश से संबंध है उन्होंने बयान किया हुज़ूर अनवर को देख कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई और हमारे लिए यह बहुत सौभाग्य की बात थी। इसी प्रकार हुज़ूर अनवर की इमामत में नमाज़ जोहर और असर अदा करने का अवसर मिला।

★एक और महिला Ghuzlan Albans Alim साहिबा का भी संबंध मराकश से है और बेल्जियम में रहती हैं उन्होंने अपनी बुज़ुर्ग माता जी की प्रतिक्रियाओं को वर्णन करते हुए कहा- मेरी माता जी ने 2011 में बैत की थी और इसके बाद कभी भी जलसा UK में सम्मिलित होने से नहीं रही लेकिन पिछले 2 साल से बीमारी और कमज़ोरी के कारण UK और जर्मनी के जलसा में सम्मिलित नहीं हो सकी और उनके लिए यह बड़ी दुख की बात थी कि वे हुज़ूर अनवर के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ सके लेकिन हुज़ूर अनवर का यह बेल्जियम का बाबरकत दौरा उनके लिए बहुत बड़ी नेमत था और उनके लिए अत्यंत खुशी का अवसर था हुज़ूर अनवर के मिशन हाउस में तशरीफ लाने से पूर्व मेरी माता जी भी समस्त औरतों के साथ तेज धूप और गर्मी में अपने आका के स्वागत के लिए प्रतीक्षा में थीं। जैसे ही हुज़ूर अलवर की गाड़ी मिशन हाउस में प्रवेश हुई और हुज़ूर अपनी गाड़ी से बाहर निकलें तो मेरी माता जी अपने आंसू न रोक पाईं। इसके बाद हुज़ूर अनवर के पीछे नमाज़ जोहर और असर पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरी माता के लिए सबसे अधिक खुशी का अवसर वह था जब हुज़ूर अचानक नीचे लगना हॉल में तशरीफ ले आए उस समय सारी लजना सिवाय कुछ एक के खाने में व्यस्त थीं। इसलिए मेरी माता को बड़े निकट से दूर का दीदार करने का सौभाग्य मिला। हुज़ूर अनवर ने वहां मौजूद एक लजना से मेरी माता जी के बारे में पूछा तो हुज़ूर अनवर

शेष पृष्ठ 9 पर पढ़ें

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad